॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

May Almighty Illuminate our intellect and inspire us towards the righteous path.

सकारात्मक परिवर्तन का संवाहक पत्र

संस्कृति संचार

RNI- UTTBIL/2014/57984

॥ दीक्षान्त विशेषांक ॥ ॥ देव संस्कृति विश्वविद्यालय ॥ ॥ फरवरी - २०१७॥ ॥ वर्ष ०३, अंक 10, पृष्ठ : १२॥ ॥ मूल्य : रू.५.००॥

देसंविवि के 15 वर्ष- एक विहंगावलोकन

देव संस्कृति विवि का वैश्विक सांस्कृतिक

दिग्विजय अभियान

● पत्रकारिता एवं जनसंचार केन्द्र

युगऋषि आचार्य पं. श्रीराम शर्मा के स्वप्न एवं दर्शन पर आधारित देव संस्कृति विश्वविद्यालय उनके विज़न के अनुरूप प्रगति पथ पर अग्रसर है। 15 वर्ष के संक्षिप्त अन्तराल में इसने मूल्यपरक शिक्षा के क्षेत्र में कई मानक गढ़े हैं, जो इसकी ध्येयनिष्ठा का परिचय देते हैं। अभी बहुत कुछ करना शेष है, लेकिन जो हो चुका उसका लेखा-जोखा उत्साहवर्धक है और आश्वस्त करता है कि देसंविवि आधुनिक युग के नालन्दा-तक्षशिला की गौरवपूर्ण भूमिका निभाने की ओर अग्रसर है।

प्रस्तुत है इसकी विकास यात्रा के कुछ महत्त्वपूर्ण पड़ाव, यादगार पल एवं मील के पत्थर-

2001 में महाविद्यालय से शुरु देसंविवि का पहला ज्ञानदीक्षा समारोह 2002 में होता है, जिसकी श्रृंखला में अब तक 30 ज्ञानदीक्षा समारोह सम्पन्न हो चुके हैं। ज्ञानदीक्षा की यह परम्परा अन्य विश्वविद्यालयों के लिए एक अनुकरणीय पहल बन चुकी है।

दीक्षान्त - 2006 में पहला दीक्षान्त समारोह, तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत की अध्यक्षता में सम्पन्न होता है। उसके उपरान्त क्रमशः 2008, 2010, 2012 में अगले दीक्षान्त डॉ. अब्दुल कलाम आजाद, श्रीमती मार्गेट अल्वा एवं श्री प्रणव मुखर्जी की साक्षी में सम्पन्न हुए।

अंतर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय सेमिनार, गोष्ठीयाँ, कार्यशालाएँ - विवि में अब तक कई राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, गोष्ठीयों, कार्यशालाएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। 2010 महाकुंभ में शुरु अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव क्रमशः गति पकड़ता जा रहा है, जिसके 5 आयोजन सम्पन्न हो चुके हैं तथा इसका छठा संस्करण 2017 में सम्पन्न होने जा रहा है।

साप्ताहिक गीता-ध्यान कक्षाएं - कुलाधिपति की साप्ताहिक गीता-ध्यान कक्षाएं देसंविवि के मूल्यपरक शिक्षण की मौलिक विशेषता हैं, जिनमें योग के कर्मकौशल से लेकर अंतर्जगत की यात्रा के ज्ञान-विज्ञान से रुबरु कराया जाता है। अब तक 216 से अधिक नवरात्रि की विशेष कक्षाएं चल चुकी हैं और 160 से अधिक विषयों पर ध्यान कक्षाएं सम्पन्न हो चुकी हैं।

पाठ्यक्रम - पूरा पाठ्यक्रम 10 विभागों में सिमटा है जो योग, मनोविज्ञान, शिक्षा, पर्यावरण, पत्रकारिता, कम्प्यूटर, ग्राम प्रबन्धन, भाषा, भारतीय संस्कृति-पर्यटन एवं प्राच्य विद्या विभागों के विभिन्न केंद्रों के माध्यम से संचालित हो रहा है। इनमें लगभग 1200 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं।

पीएचडी- अब तक लगभग 200 शोधार्थी पीएचडी कर चुके हैं, 136 शोधरत हैं। शोध कार्यों में विवि के विज़न के अनुरुप विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय, पुरातन और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का संगम-समन्वय तथा युगीन समस्याओं के समाधान का प्रयास देखा जा सकता है।

मान्यता - 2010 में यूजीसी से मान्यता प्राप्त। जिसमें योग के क्षेत्र में उत्कृष्टता केंद्र के रुप में विकसित करने का सुझाव दिया गया था। इसपर अमल करते हुए आज योग के क्षेत्र में विवि कई मानक स्थापित कर चुका है।

2012 में आईएसओ सर्टिफिकेशन होता है।

2016 में नैक द्वारा सर्टिफिकेशन के साथ देसंविवि की मूल्यपरक शिक्षा को एक अनुकरणीय पहल बताया जाता है।

देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या द्वारा यूनेस्को में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए भारतीय योग एवं अध्यात्म पर उद्बोधन, जिसके बाद यूनेस्को द्वारा योग को वैश्विक सांस्कृतिक धरोहर का दर्जा दिया गया।

योग में उत्कृष्ट प्रदर्शन- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देसंविवि को अब तक दर्जनों पुरस्कार मिल चुके हैं। योग विभाग के छात्र चंचल के नाम शीर्षासन का विश्व रिकार्ड है और विवि की योग छात्रा दिलराजप्रीत कौर को उत्तराखण्ड का ब्रांड एम्बेस्डर बनाया जाता है।योग में उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं विशिष्ट योगदान के लिए देसंविवि को आयुष मंत्री श्रीपद नायक द्वारा योग एक्सीलेंस अवार्ड मिल चुका है।

वैश्विक एमओयू - विश्वभर की 27 शिक्षण संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों के साथ एमओयू, शैक्षणिक अनुबन्ध देसंविवि के व्यापक होते वैश्विक क्षितिज को इंगित करता है।

शोध एवं प्रकाशन - वर्ष 2017 में श्रीराम शर्मा आचार्य शोध पीठ की स्थापना होती है। साथ ही एशिया का पहला बाल्टिक सेंटर यहाँ स्थापित होता है। अंतर्राष्ट्रीय शोध जर्नल पहले से ही प्रकाशित किया जा रहा है।

सोशल इंटर्नशिप- यह विवि की एक अभिनव पहल है, जिसमें अंतिम वर्ष के विद्यार्थी समाज में जाकर अर्जित ज्ञान के वितरण का व्यवहारिक शिक्षण पाते हैं। अब तक जुलाई 2003 से जनवरी 2017 तक की अवधि में सम्पन्न हुई 25 चरणों की सोशल इंटर्नशिप में लगभग 40 लाख विद्यार्थियों से देसंविवि के छात्र-छात्राओं ने सम्पर्क किया और उन्हें जीवन प्रबन्धन, आत्म-निर्माण और समाज-निर्माण के महत्वपूर्ण सूत्र बताए।

राष्ट्रीय सेवा योजना - अपने रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से युवा शक्ति को समाजसेवा से जोड़ रहा है। उत्तराखण्ड का प्रतिनिधित्व करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार, इसके उल्लेखनीय कार्यों को पहचान दे रहे हैं।

राष्ट्रीय पुरस्कार - पर्यावरण, फाइन आर्ट्स एवं समाज सेवा में डॉ. पंकज सैनी, श्री मुकेश तोमड़िया और श्री प्रखर सिंह को राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं।

पास आउट विद्यार्थी विश्वविद्यालय के संस्कृति दूत के रुप में अपनी भूमिका निभाते देखे जा सकते हैं। अपने-अपने क्षेत्रों में इनकी श्रमशीलता, व्यवहार और पेशेवर कौशल को सराहना मिली है।

एक ब्रांड के रुप में देसंविवि से दीक्षित छात्र-छात्राओं की पहचान बन रही है और अपने-अपने क्षेत्र में काम करते हुए वे समाज-राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे रहे हैं।

इसी के साथ विभिन्न विषयों में अध्ययन एवं शोध-अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्टता के केंद्र, सेंटर ऑफ एक्सेलेंस खोले जा रहे हैं, जिससे कि भारतीय विद्याओं के पुनर्जागरण और जीवन विद्या के आलोक केंद्र के रुप में देसंविवि अपनी भूमिका और प्रभावी रुप में निभा सके।

"15 वर्ष पूर्व बोई गई देवसंस्कृति की पौध आज तरूणाई में प्रवेश कर चुकी है, और वटवृक्ष के रूप में देश ही नहीं विश्व स्तर पर शांति-सृजन, समाधान-निर्माण का संदेश दे रही है। परमपूज्य गुरुदेव के विज़न के अनुकूल शिक्षा-विद्या, जानकारी-संस्कार, विज्ञान-अध्यात्म और परम्परा-आधुनिकता का अद्भुत संगम-समन्वय यहाँ देखा जा सकता है। छात्र एवं आचार्य नवनिर्माण के महत कार्य में संलग्न हैं। अपने-अपने क्षेत्रों में यहाँ से पास आउट विद्यार्थी देव संस्कृति के दूत के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।"

डॉ. प्रणव पण्ड्या,
कुलाधिपति, देसंविवि

उत्कृष्टता के नए मानक छूती विभागीय गतिविधियाँ

● पत्रकारिता एवं जनसंचार केन्द्र

देसंविवि का हर विभाग कुलपिता की शिक्षा के साथ विद्या की संकल्पना के अनुरुप अकादमिक गतिविधियों में संलग्न है। समयानुकूल अपडेटेड पाठ्यक्रम, व्यावहारिक प्रशिक्षण और उत्कृष्ट शोध हर विभाग की पहचान है। विवि का आध्यात्मिक वातावरण इनके मूल्यपरक शिक्षण में नया आयाम जोड़ता है। प्रस्तुत है संक्षेप में हर विभाग का एक विहंगावलोकन करता पर्यवेक्षण -

योग-विज्ञान विभाग- उत्कृष्टता के नित नए मानक छू रहा है। इसके निर्मित पाठ्यक्रम का देश के अन्य योग संस्थानों द्वारा अनुकरण किया जा रहा है। देश में योग के पाठ्यक्रम को व्यापक बनाने में इसकी निर्णायक भूमिका रही है। राष्ट्रीय स्तर पर विभाग इस कमेटी का सदस्य है। इसके छात्र-छात्राओं द्वारा राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मेडल लेना सामान्य बात है। शोध के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्य कर चुका है व प्रयासरत है। पोलिक्लीनिक में दर्जन भर वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियाँ उपलब्ध हैं, जहाँ जटिल रोगों का सरल उपचार किया जाता है।

मनोविज्ञान विभाग- आधुनिक मनोविज्ञान के साथ विभाग, भारतीय मनोविज्ञान की आध्यात्मिक विरासत को सामने लाने के लिए संकल्पित है, प्रयासरत है। विभाग, देश के चुनिंदा विभागों में है, जहाँ मनोचिकित्सा का व्यवहारिक शिक्षण दिया जाता है। मनोरोगों की बाढ़ के बीच आक्रांत इंसान की समस्याओं के निदान की दिशा में विभाग सक्रिय है। इस दिशा में विभाग कई महत्वपूर्ण शोधकार्यों में संलग्न है।

शिक्षा विभाग- शिक्षा को मूल्यों से जोड़कर गुणवत्तापरक शिक्षण का व्यवहारिक प्रशिक्षण विभाग दे रहा है। बीएड जैसे पाठ्यक्रम के माध्यम से ऐसे उत्कृष्ट शिक्षक विभाग से तैयार किए जा रहे हैं। मूल्यपरक एवं क्वालिटी शिक्षा पर शोध को लेकर विभाग सचेष्ट है।

पर्यावरण विज्ञान विभाग- विश्वविद्यालय में सभी स्तर पर पर्यावरण शिक्षा, पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा है। इसके साथ विभाग विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षण देते हुए आधुनिक युग में पर्यावरण प्रदूषण एवं असंतुलन के व्यावहारिक समाधान को लेकर शोध से लेकर समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इसके लिए विभाग कई राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार पा चुका है।

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग- विभाग विद्यार्थियों को रोजगारपरक तकनीकी शिक्षा दे रहा है। विश्वविद्यालय के हर स्तर पर विभाग कम्प्यूटर से जुड़ा मूलभूत कौशल प्रशिक्षण दे रहा है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई संस्थाओं से जुड़कर विभाग शोध की दिशा में मानक स्थापित कर रहा है।

वैदिक इंफोर्मेटिक्स के क्षेत्र में विभाग ने अभिनव पहल की है और कम्प्यूटर एवं चेतना विज्ञान से जुड़े गंभीर एवं सूक्ष्म पहलुओं पर यहाँ शोध कार्य चल रहा है।

ग्राम प्रबन्धन विभाग- विभाग देसंविवि के कुलपिता के आदर्श ग्राम की संकल्पना को साकार रुप देने की दिशा में प्रयासरत है। अनुभवी शिक्षकों के दल के साथ विभाग के विभिन्न प्रकल्प इस दिशा में सक्रिय हैं। सप्ताह में एक दिन विद्यार्थियों को गाँव में ले जाकर इसका व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। विभाग में नए पाठ्यक्रम को जोड़कर इसे और प्रभावी बनाया जा रहा है।

भाषा विभाग- देववाणी संस्कृत, देश की सबसे लोकप्रिय भाषा हिंदी एवं बाह्य संपर्क की भाषा अंग्रेजी को लेकर भाषा विभाग महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय के सभी छात्रों को भाषा से जुड़ा आवश्यक संचार कौशल सिखाया जा रहा है और इस क्षेत्र में कई गंभीर शोध कार्य चल रहे हैं।

भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन विभाग- विभाग एक ओर भारतीय संस्कृति के पुरातन से लेकर आधुनिक स्वरुप तक उपयोगी पाठ्यक्रम चला रहा है। दूसरी ओर पर्यटन के क्षेत्र में उत्तराखण्ड सहित देश में पर्यटन की प्रचलित एवं उभरती विधाओं का रोजगार परक व्यावहारिक प्रशिक्षण दे रहा है। शोध के माध्यम से इनको और व्यापक रुप दिया जा रहा है।

प्राच्य विद्या विभाग- विभाग जहाँ देवसंस्कृति की ज्ञान-विज्ञान की पुरातन विरासत को शोध अनुसंधान के साथ अनावृत करने में सचेष्ट है वहीं धर्म विज्ञान जैसे व्यवहारिक पाठ्यक्रम के साथ युगानुकूल धर्म पुरोहित तैयार कर रहा है। विज्ञान के साथ अध्यात्म के संगम-समन्वय की पहल इसकी अपनी विशेषता है। विभाग द्वारा संचालित जीवन प्रबन्धन पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करती विवि की मौलिक पहल है।

संचार विभाग- विभाग पत्रकारिता, जनसंचार एवं एनीमेशन-ग्राफिक्स की विभिन्न विधाओं से नई पीढ़ी को परिचित कराते हुए उन्हें मूल्यपरक एवं पॉजिटिव जर्नलिज्म का व्यवहारिक प्रशिक्षण दे रहा है, वहीं संचार माध्यमों को सकारात्मक परिवर्तन के संवाहक बनाने की दिशा में कई स्तर पर कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रकाशन कार्यों में विभाग का सक्रिय योगदान रहता है।

देसंविवि के ३०वां ज्ञानदीक्षा में विभिन्न राज्यों के विद्यार्थी हुए शामिल

शिक्षण पद्धति में हो सार्थक बदलाव : डॉ. प्रणव पण्ड्या

❑ चारू, श्रद्धा

हरिद्वार, देव संस्कृति विश्वविद्यालय में 2017 के नए सत्र की शुरूआत ज्ञानदीक्षा समारोह के साथ सम्पन्न हुई। मृत्युंजय सभागार में 30 वाँ ज्ञानदीक्षा समारोह का उद्घाटन देसंविवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं मुख्य अतिथि स्वामी परमात्मानंद सरस्वती ने संयुक्त रूप से किया।

समारोह के अध्यक्ष देसंविवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि देसंविवि में पाठ्यक्रम के अलावा जो जीवन जीने की कला सिखाई जाती है, यही मनुष्य को ऊँचा उठाता है। शिक्षा व विद्या के बीच अंतर स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा जहाँ भौतिक ज्ञान को बढ़ाता है, तो वहीं विद्या समग्र जीवन का प्रबंधन सिखाता है। कुलाधिपति ने कहा कि वर्तमान शिक्षण पद्धति में युवाओं को स्वावलंबी बनाने की दिशा मे सार्थक प्रयास होना चाहिए। कुलाधिपति ने देसंविवि के आदर्श सूत्र- 'निगेटीविटी आउट-पॉजीटीविटी इन' को जीवन के अनिवार्य अंग बनाने की बात कही। कुलाधिपति ने देवभूमि की गौरव गरिमा को याद करते हुए राष्ट्र की सुरक्षा में शीर्षस्थ स्थान पर उत्तराखंड की भागीदारी पर प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर कुलपति श्री शरद पारधी ने मुख्य अतिथि सहित सभी का स्वागत सतकार किया।

प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने भी विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि आप किसी साधारण विश्वविद्यालय का हिस्सा नहीं बन रहे। यह चरित्र को प्रामाणिक एवं व्यक्तित्व को उदात्त बनाने वाला, जीवन के उद्देश्य में ऊँचाईयां लाने वाला, साक्षरता के साथ जीवन की सार्थकता का बोध कराने वाला विश्वविद्यालय है।

परिवर्तन सही दिशा में हो : स्वामी परमात्मानंद सरस्वती

स्वामी दयानदं सरस्वती के वरिष्ठ शिष्य व आर्ष विद्या मंदिर के संस्थापक मुख्य अतिथि स्वामी परमात्मानंद सरस्वती ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ताला खोलने के लिए चाबी को सही दिशा में लगानी होती है, तभी ताला का बंधन खुलता है। ठीक उसी तरह युवा अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगायें, तभी सफलता मिलेगी। युवाओं को गढ़ते हुए उनमें सार्थक परिवर्तन का जो कार्य देसंविवि कर रहा है, यह अद्वितीय है। उन्होंने कहा कि मानवीय बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने का जो मंत्र देसंविवि में सिखाया जाता है, उसे अपनी पढ़ाई के बाद भी जारी रखेंगे, तो निश्चित मानें आपके जीवन में सही दिशा में परिवर्तन होगा। हिन्दू धर्म महासभा के अध्यक्ष स्वामी परमात्मानंद जी महाराज ने गीता व रामायण के विभिन्न पहलुओं का जिक्र करते हुए युवाओं को सही दिशा की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया।

इससे पूर्व कुलाधिपति ने नवप्रवेशी विद्यार्थियों एवं आचार्यों को मिलकर शिक्षण कार्य एवं व्यक्तित्व विकास के साथ आगे बढ़ने का दीक्षा संकल्प दिलाये। समारोह के मुख्य अतिथि श्री स्वामी जी एवं कुलाधिपति ने नवप्रवेशी विद्यार्थियों को देसंविवि का बैज प्रदान किया। इस अवसर पर कुलाधिपति ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह, गायत्रीमंत्र चादर एवं युगसाहित्य भेंटकर सम्मानित किया। कुलसचिव श्री संदीप कुमार ने बताया कि देसंविवि के वें ज्ञानदीक्षा समारोह में छः मासीय पाठ्यक्रम- योग विज्ञान, धर्म विज्ञान एवं समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए बिहार, छत्तीसगढ़, मप्र, उप्र, ओडिशा, महाराष्ट्र व राजस्थान के नवप्रवेशी छात्र-छात्राओं को ज्ञानदीक्षा के सूत्र से दीक्षित किया गया। श्री सूरज प्रसाद शुक्ल ने ज्ञान दीक्षा का वैदिक कर्मकाण्ड तथा गोपाल शर्मा ने मंच संचालन किया। इस अवसर पर शांतिकुंज परिवार, देसंविवि परिवार सहित विभिन्न राज्यों से आये गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

इंडियन योग एसोसिएशन की राष्ट्रीय बैठक शांतिकुंज में सम्पन्न

स्कूल, कॉलेज में योग के परिष्कृत व मानकीय पाठ्यक्रम बनाने पर जोर

आई.वाई.ए की राष्ट्रीय बैठक में योग पर चर्चा करते प्रतिनिधि

❑ सत्याभा, औली

हरिद्वार, फरवरी को इंडियन योग एसोसिएशन की राष्ट्रीय बैठक गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में सम्पन्न हुई। देश भर के प्रतिष्ठित योगाचार्यों ने योग को और ज्यादा प्रचलित एवं स्वीकार्य बनाने की दिशा में कार्य करने की योजना बनाई। बैठक में गठन हुए इंडियन योग एसोसिएशन (आई.वाई.ए.) का पुर्नगठन कर सर्वसम्मति से योगगुरु स्वामी रामदेव को अध्यक्ष तथा वस्वा रेड्डी को सचिव बनाया गया। अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या, श्रीश्री रविशंकर, कैवल्य धाम के ओ.पी. तिवारी, विवेकानंद योगपीठ बैंगलूर के एचआर नागेन्द्र, गुरुकुल कांगड़ी के डॉ. ईश्वर भारद्वाज, सहारनपुर के भारत भूषण इसके सदस्य होंगे। यह एसोसिएशन योग को व्यापक प्रचार-प्रसार करने, विभिन्न स्वरूपों की प्रमाणिकता के साथ योग से संबंधित डिग्रियों का निर्धारण करने जैसे महत्वपूर्ण कार्य करेगा। बैठक में विदेशी विद्यार्थियों के लिए योग शिक्षा, उनके वीजा और संचालित हो रहे संस्थानों में योग को बढ़ावा देने, राज्यों में आई.वाई.ए.की इकाई गठित करने, भारतीय योग एवं योग प्रशिक्षकों एवं इसके व्यवस्थित प्रबंधन और विकास, योग को लेकर रिचर्स सेंटर खोलने सहित बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा हुई। इस अवसर पर गायत्री परिवार प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि विभिन्न देशों में योग को लेकर अलग-अलग पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। आई.वाई.ए. के माध्यम से सभी में एकरूपता लाने के साथ-साथ समग्र विश्व में योग के क्षेत्र में भारत का वर्चस्व बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आई.वा.ई.ए. के अध्यक्ष स्वामी रामदेव ने कहा कि योग एक जीवन पद्धति है, जो व्यक्ति को रोगमुक्त रखने के साथ ही संस्कारित, संयमित एवं सामर्थ्यवान बनाती है। श्रीश्री रविशंकर ने कहा कि योग ऋषियों की धरोहर है और बहुत पुरानी भारतीय विरासत है। सभी को मिलकर योग को नई बुलन्दियों पर पहुँचाते हुए भारत का परचम विश्व भर में फहराना है।

पंजाब के युवा गुरु गोविंद सिंह जी से सीखें राष्ट्रभक्तिः डॉ. प्रणव पण्ड्या

❑ प्रगति

गुरु गोविंद सिंह जी के 350 वें प्रकाश पर्व के शुभ अवसर पर लुधियाना में दिनांक 3 व 4 दिसंबर को युवा क्रांति सम्मेलन आयोजित हुआ। इस सम्मेलन के प्रमुख अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या थे। उन्होंने पंजाब की वीरभूमि को प्रणाम करते हुए कहा कि सीमाओं की रक्षा कर रहे सैनिकों के राष्ट्रभक्ति और त्याग-बलिदान के कारण आज हमारा देश सुरक्षित है। राष्ट्र की वर्तमान समस्याओं पर चर्चा करते हुये आत्म विश्लेषण करने का आवाहन किया। पश्चिमोत्तर जोन के युवाओं का पथ प्रदर्शन करने आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के साथ शांतिकुंज की टोली पहुंची थी। इसमें पंजाब, हरियाणा, जम्मू कश्मीर से आए युवा कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान विविध विषयों पर समूह चर्चाओं एवं कई संकल्पों के साथ युवा मण्डलों का गठन भी किया गया। महिलाओं पर अत्याचार होता देख जिसमें आक्रोश न उभरे वह यौवन कैसा? अन्याय के विरुद्ध जिसकी आवाज ना उठे वह यौवन कैसा? जिसमें अपनी संस्कृति और राष्ट्र के उत्थान की उमंग ना हो वह यौवन कैसा?

अपनी प्रखर वक्तव्यों से आदरणीय डॉ. प्रणव पांड्या ने आत्मवादी जीवन जीने के लिए युवाओं को प्रेरित किया। और यहाँ उपस्थित हर व्यक्तियों को कम से कम एक युवा को जगाने, युग निर्माण आन्दोलन के लिए प्रेरित करने का संकल्प लेने को कहा।

शिक्षा व्यवस्था को विद्यान्मुखी बनाने का संदेश

❑ नवनीत

सहारनपुर क्षेत्र के मुन्नालाल एवं जयनारायण खेमका गर्ल्स कॉलेज के संस्थापक श्री मुन्नालाल जी एंव श्री जयनारायण जी खेमका की सामाजिक सेवाएँ प्रशंसनीय है। उन्होंने 50 वर्ष पूर्व नारी शिक्षा को विशेष महत्व दिया। देसंविवि के कुलाधिपति आदरणीय डॉ. प्रणव पण्डया जी के विचारों ने वर्तमान समय की शिक्षा व्यवस्था को विद्यान्मुखी बनाने का संदेश दिया। उन्होंने 14 दिसम्बर का मुन्नालाल एंव जयनारायण खेमका गर्ल्स कॉलेज सहारनपुर के स्वर्ण जयंती समारोह को संबोधित किया।

आदरणीय डॉ. साहब जी ने कहा कि सुविख्यात संस्कृत श्लोक- विद्या ददाति विनयम... आज विद्या ददाति धनं-सुखम् रह गया है। लेकिन गीता कहती है, अशांतस्य कुतः सुखम् ? डॉ. साहब ने देसंविवि की विशेषताओं से सभी को अवगत कराया तथा प्राचीन गुरुकुल परंपरा का आदर्श देखने के लिए वहां के छात्रों व शिक्षकों को आमंत्रित किया। कॉलेज के पांच दशक की यात्रा पर चित्र प्रदर्शनी भी लगाई गई थी।

समारोह में डॉ. वाई. विमला एवं विवि प्रवेश प्रभारी, एवं प्रो जे एस नेगी, क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी मेरठ, श्री दिग्विजय गुप्ता, सचिव सहित सैकड़ों शिक्षाविद्, शिक्षक, छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

❑ देसंविवि परिसर में स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव का कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं संस्था की अधिष्ठात्री शैलदीदी ने महाभिषेक कर कल्याणकारी चिंतन एवं विश्व शांति की कामना की।

सादगी से मनाया गया श्रद्धेया शैल जीजी का पावन जन्मदिन

❑ भरत, तुषार

हरिद्वार, शांतिकुंज प्रमुख श्रद्धेया शैल जीजी का 63वाँ जन्मदिन साद्गीपूर्ण ढंग से यज्ञीय वातावरण में मनाया गया। इस मौके पर सर्वप्रथम पूर्व न्यायाधीश श्री सत्यनारायण पण्ड्या ने मंगल तिलक कर शुभाशीष दिया। पश्चात अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या सहित शांतिकुंज के अंतेवासी कार्यकर्ता भाई-बहिनों एवं गायत्री विद्यापीठ, देसंविवि के विद्यार्थियों ने गुलदस्ता भेंटकर स्वस्थ जीवन की मंगलकामना की।

पीड़ित मानवता के लिए समर्पित शैलजीजी असहायों, पीड़ितों की सेवा को ईश्वर सेवा मानते हुए उनके दुःख - दर्द का हिस्से बनने का हर संभव प्रयास करती हैं। शैलजीजी संपर्क में आने वाले परिजनों को आत्मिक विकास के साथ-साथ राष्ट्र के विकास में जुटने के लिए प्रेरित करती हैं। नारी जागरण शिविर, महिला सम्मेलन, युवा चेतना शिविर, युवा सम्मेलन आदि विभिन्न शिविरों के माध्यम से उनमें ममत्व व प्यार उड़ेलती हैं, उनके कष्ट-कठिनाई व समस्याओं के समाधान के लिए हर संभव सहयोग करती हैं। श्रद्धेया जीजी में एक माँ की भांति समाज की पीड़ा दिखाई देती हैं। वे विभिन्न प्रशिक्षण सत्रों के लिए, गरीबों के विकास के लिए सदैव प्रयासरत रहती हैं। वे समाज के प्रत्येक वर्ग, सम्प्रदायों के उत्थान के लिए गायत्री परिवार को जुटे रहने हेतु भावनात्मक पोषण करती हैं।

दैनन्दिन जीवन में गीता विषय पर मुम्बई में विशाल जनसम्मेलन

❑ अखिल विश्व गायत्री परिवार के डॉ. प्रणव पण्ड्या सहित ब्रह्मकुमारी शिवानी एवं स्वामिनी विमलानंद ने दिया मार्गदर्शन

दैनन्दिन जीवन में गीता पर सम्बोधन देते अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख डॉ प्रणव पण्ड्या

❑ श्रुति, ईशा

17 दिसम्बर को दादर, मुम्बई के योगी सभागार में 'दैनन्दिन जीवन में गीता' विषय पर वृहद् सम्मेलन का आयोजन हुआ। 2500 लोगों से खचाखच भरे इस सभागार में गीता की गूंज मीडिया के माध्यम से देश के कोने-कोने तक पहुंची। अखिल विश्व गायत्री परिवार की यूथ यूनिट मुम्बई दिया की टीम ने कार्यक्रम का आयोजन करवाया। देसंविवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी इसके मुख्य वक्ता तथा विशिष्ट अतिथि बहन शिवानी, प्रजापिता ब्रह्मकुमारी और स्वामिनी विमलानंद, चिन्मय मिशन रहीं। देसंविवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या ने गीता का सूत्र को बड़े ही सरल तरीके से जनमानस को समझाया। डॉ. पण्ड्या देसंविवि के विद्यार्थीयों को जीवन विद्या सिखाने के लिए प्रत्येक बृहस्पतिवार को गीता-ध्यान की कक्षाएं लेते हैं। गीता का सार बताते हुए उन्होंने कहा कि गीता अर्जुन के माध्यम से हर व्यक्ति को दिया गया भगवान का संदेश है। यह दैनन्दिन जीवन में पान करने वाला अमृत है। यह युद्धभूमि में हथियार डाल चुके अर्जुन के लिए नहीं, बल्कि जीवन समर लड़ रहे हर उस व्यक्ति के लिए रसायन है जो दैनन्दिन में आने वाली समस्याओं से हताश, निराश, परेशान होते और जीवन से भागते दिखाई देते हैं।

उन्होंने बताया कि आज जीवन का लय बिगड़ गया है, यही दुख, शोक, अवसाद का कारण है। गीता जीवन का गीत है। इसके सूत्र सम्यक जीवन जीने का पाठ पढ़ाते हैं। कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग के माध्यम से जीवन को परिष्कृत कर जीवन लक्ष्य तक पहुंचाने का मार्ग प्रशस्त करती है गीता। यह बच्चे, बूढ़े, जवान, सभी के लिए अत्यंत उपयोगी है।

स्वामिनी विमलानंद ने कहा कि व्यक्ति के सामने केवल परिस्थितियां आती हैं। मुसीबत तो वह अपनी मनःस्थिति के कारण मान लेता है। गीता कहती है मनःस्थिति बदलो तो परिस्थिति बदल जायेगी। जब अर्जुन अवसाद ग्रस्त था तब भी और जब वह युद्ध करने के लिए तैयार हो गया तब भी परिस्थिति तो वही थी, बस भगवान के उपदेश को सुनकर अर्जुन की मनःस्थिति बदल गयी थी।

गीता हमें मनःस्थिति बदलना ही तो सिखाती है। ब्रह्मकुमारी बहन शिवानी ने कहा कि हर व्यक्ति जन्म-जन्मातरों के कर्म और संस्कारों के साथ इस दुनिया में आता है। उन्हीं का प्रतिफल हमें भोगना पड़ता है। अपने आत्म स्वरूप को पहचानो, तद्नुरूप अपने कर्म को श्रेष्ठ बनाते चलो। अच्छे कर्मों का प्रतिफल आगे अच्छा ही होता है गीता की यही सबसे बड़ी सीख है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रध्यापकों ने गीता पर नाट्य प्रस्तुती दी। नाट्य प्रस्तुती ने गीता को जीवंत ही कर दिया। ऐसा लग रहा था मानों आज के अर्जुन को स्वयं भगवान कृष्ण वर्तमान समस्याओं का समाधान बड़े सरल तरीके से दे रहे हो। वर्तमान समस्याओं का समाधान देती इस प्रस्तुती ने सबका मन मोह लिया।

योग विश्व की सांस्कृतिक धरोहर- यूनेस्को

आकांक्षा, अंशिका

देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने किया भारत का प्रतिनिधित्व, मिला 160 देशों का समर्थन।

योग की जननी, भारत भूमि एक बार फिर से गौरवान्वित हो गयी जब संयुक्त राष्ट्र द्वारा योग को वैश्विक धरोहर का सम्मान प्राप्त हुआ। यूनाईटेड नेशन कन्वेंशन सेंटर एडिस अबाबा, इथियोपिया में हुई संयुक्त राष्ट्र संघ के शिक्षा प्रकल्प यूनेस्को की बैठक में यह निर्णय लिया गया। इस बैठक में आयुष मंत्रालय ने भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिये देसंविवि हरिद्वार के प्रति-कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या तथा केवल्यधाम योग संस्थान के प्रतिनिधि डॉ. बी.आर शर्मा को भेजा था। यूनेस्को द्वारा आयोजित इस 11वीं बैठक में भारतीय विशेषज्ञों की प्रस्तुति से संतुष्ट हुए। 2014 में भारत सरकार ने योग को विश्व की सांस्कृतिक धरोहर घोषित करने के लिये पहल की थी । इतने प्रयास एवं सहभागिता से सभी 160 देशों के राजदूतों ने सर्वसम्मति से योग को वैश्विक धरोहर घोषित किया। डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कई राजदूतों से व्यक्तिगत चर्चा कर उनकी जिज्ञासाओं और प्रश्नों का संतोषजनक समाधान प्रस्तुत किया। उन्होंने सभी के सामने योग के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया। उन्होंने यह भी समझाया कि योग केवल शारीरिक स्वास्थ्य का साधन नहीं अपितु जीवन के सर्वांगपूर्ण विकास के लिये जरूरी है। यूनेस्को में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के प्रतिनिधि संयुक्त सचिव श्री एम.एम श्रीवास्तव, भारतीय प्रतिनिधि एवं राजदूत श्रीमती रूचिरा कंबोज भी बैठक में उपस्थित थे। उन्होंने सभी भारतीयों की ओर से विश्व समुदाय का आभार व्यक्त किया। देसंविवि लौटने पर डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि 160 देशों का एकमत से इसे स्वीकार करना भारत के लिए गौरव की बात है। इसे वे परम पूज्य गुरूदेव की युग निर्माण योजना का सुनियोजित अंग मानते हैं। उनका कहना है कि विश्व की सांस्कृतिक धरोहर घोषित होने के बाद भारतीय संस्कृति के प्रति सारे विश्व का आकर्षण तेजी से बढ़ेगा। उन्होंने बताया कि उत्तराखण्ड स्थित देसंविवि योग के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक पहचान बना चुका है तथा पिछले कई दशकों से प्रयासरत हैं।

एसोसिएशन ऑफ कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटीज के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने किया भारत का प्रतिनिधित्व

डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने अपने यूरोप प्रवास के दौरान किया भारत का प्रतिनिधित्व

युक्ति, स्वीटी

ब्रिटिश विदेश मन्त्रालय एवं कॉमनवेल्थ ऑफिस की ओर से आयोजित असोसिएशन ऑफ कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटीज के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मलेन 'रोल ऑफ फेथ बेस्ड यूनिवर्सिटीज इन प्रमोटिंग रिस्पेक्ट' की अध्यक्षता भारत ने की। सम्मलेन में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इस सम्मलेन में देश विदेश के चुने हुये 20 प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के प्रतिकुलपति को आमंत्रित किया गया था।

> जहाँ आपसी तनाव व टकराव बढ़ रहा है, सहिष्णुता मिट रही है, सद्भाव मिट रहा है। ऐसे में भारतीय संस्कृति को अपनाने पर हम समाधान की सही कुंजी पा सकते हैं।

इस अवसर पर डॉ. पण्ड्या ने कहा की वर्तमान समय विश्व के लिए अत्यन्त विषम भरा है। जहाँ आपसी तनाव व टकराव बढ़ रहा है, सहिष्णुता मिट रही है, सद्भाव मिट रहा है। ऐसे में भारतीय संस्कृति को अपनाने पर हम समाधान की सही कुंजी पा सकते हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति के वसुधैव कुटुंबकम तथा पंडित श्रीराम शर्मा के मानव मात्र एक समान के सिद्धांत को प्रमुख बताया। इसके साथ डॉ. पण्ड्या ने भारतीय संस्कृति की ऋषि परम्परा पर आधारित देव संस्कृति विश्वविद्यालय के स्वरुप को सभी के समक्ष रखा। देसंविवि के पाठ्यक्रम, विद्यार्थियों को स्वावलंबी बनाने वाली शिक्षा तथा देसंविवि के आधुनिक शिक्षा के साथ व्यावहारिक जीवन मूल्यों के अद्भुत समन्वय से सभी काफी प्रभावित हुए।

डॉ. पण्ड्या के इस यूरोप प्रवास के दौरान चेक रिपब्लिक के सेन्ट चार्ल्स यूनिवर्सिटी, मासार्यक यूनिवर्सिटी के साथ महत्वपूर्ण विषयों को लेकर शैक्षिक समझौते पर हस्ताक्षर भी हुए। इसके तहत विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के विकास हेतु चलाये जा रहे कार्यक्रमों का आदान-प्रदान किया जायेगा। इस सम्मेलन में मिडिल ईस्ट देश जॉर्डन के प्रिंस मोहमद बिन गाजी और कॉमनवेल्थ देशों की नई प्रमुख स्कॉटलैंड की बैरोनेसने गायत्री परिवार एवं देसंविवि की प्रशंसा की। उन्होंने डॉ. चिन्मय पण्ड्या के आमंत्रण को स्वीकार करते हुए, निकट भविष्य में देसंविवि एवं शांतिकुंज आने का वादा भी किया। डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने वर्तमान वैश्विक संकट के समाधान में कॉमनवेल्थ देशों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे समय में कॉमनवेल्थ के प्रयास सराहनीय है। विभिन्न मतों के लोगों को एक मंच पर लाना एवं उन्हें जन-समूह के हित के लिए सोचने हेतु प्रेरित करना निश्चय ही महत्वपूर्ण कदम है।

चीन और जापान का भारतीय संस्कृति एवं योग से हुआ साक्षात्कार

मृत्यंजय, संजय

चीन स्थित यूनान प्रान्त के मिन्जु विश्वविद्यालय एवं जापान के विभिन्न विश्वविद्यालयों के सदस्यों ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय का भ्रमण किया । दोनों ही देशों ने भारतीय संस्कृति को जानने से संबंधित अपनी जिज्ञासा की अभिव्यक्ति की ।

गौरतलब है कि भारत चीन योग कॉलेज में विभिन्न विषयों एवं व्यावहारिक, सामाजिक मुददों पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय से चर्चा हुई । वहीं दूसरी ओर जापानी दल ने विश्वविद्यालय की संस्कृति, दिनचर्या, जीवन शैली एवं वातावरण गहराई से शोध करने का विचार अभिव्यक्त किया । मिन्जु विश्वविद्यालय की सहसंकायाध्यक्ष ने भारतीय संस्कृति की योग विद्या को ग्रेजुएशन स्तर पर तत्काल ही कोर्स शुरू करने हेतु प्रतिकुलपति महोदय को प्रस्ताव दिया। दोनों देशों के सदस्यों ने देसंविवि के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से मुलाकात भी की तथा विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या द्वारा सभी को देसंविवि के रचनात्मक कार्यक्रमों एवं भारतीय संस्कृति तथा योग के विकास हेतु विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों से अवगत कराया गया। डॉ. पण्ड्या के अनुसार योग के दार्शनिक सामाजिक, शारीरिक, अध्यात्मिक इत्यादि सभी पक्षों को लेकर देसंविवि शोध कार्य कर रहा है साथ ही योग के वैज्ञानिक पक्षों को जानने हेतु विभिन्न प्रकार के लैबवर्क व योग बिन्दुओं पर शोधकार्य हो रहे हैं।

अर्जेन्टीना के चिकित्सकीय दल ने जाना प्राकृतिक जीवन शैली का रहस्य

स्नेह, अस्मिता

अर्जेन्टीना के मैमोनिडेस विवि से 15 चिकित्सकों के दल ने देसंविवि का भ्रमण किया। देसंविवि के योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा जैसे विभिन्न पहलुओं को देखकर दल अभिभूत हुआ। देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या से मुलाकात एवं कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या से मार्गदर्शन प्राप्त कर उनकी जिज्ञासा शांत हुई। दल नायक डॉ. फ्लोरेसिया के साथ सभी को यहां के प्राकृतिक जीवन शैली से परिचित कराया गया। विश्वविद्यालय में स्थित प्राकृतिक चिकित्सा स्थल पर विभिन्न प्रकार के उपकरणों स्टीम बाथ, फुटबॉथ, हॉट वाटर टब इत्यादि के बारे में प्रयोगात्मक प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्राकृतिक चिकित्सा विभाग द्वारा इन्हें प्राकृतिक आहार केन्द्र का भी भ्रमण कराया गया, जिसमें प्रकृतिगत खाने के वस्तुओं को देखकर दल ने इस बिन्दु की डाक्यूमेन्ट्री तैयार की । भ्रमण के उपरांत प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या द्वारा सभी सदस्यों को प्राकृतिक चिकित्सा के व्यावहारिक पहलुओं से परिचित कराया गया । डॉ. पण्ड्या के अनुसार प्राकृतिक चिकित्सा वह परम्परागत और अचूक पद्धतियां हैं जिनसे सभी रोगों का निदान संभव होता है। मनुष्य प्रकृति का भाग है एवं उसको प्रकृति के माध्यम से ही पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान किया जा सकता है।

गुजरात के युवाओं का भविष्य निर्माता प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

विचारों को सकारात्मक दिशा दें युवाः डॉ. चिन्मय

कविता, रचना, प्रिया

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज द्वारा चलाये जा रहे युवा जागरण अभियान के अंतर्गत गुजरात प्रांत के युवाओं का पाँच दिवसीय भविष्य निर्माता प्रशिक्षण शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में कुल 24 सत्र हुए, जिसमें युवा जोड़ो अभियान, स्वावलंबी, बाल संस्कार शाला जैसी रचनात्मक गतिविधियों का सैद्धांतिक प्रशिक्षण दिया गया, वहीं कुरीति, भ्रष्टाचार, बेकारी, अशिक्षा आदि को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए युवाओं को प्रेरित किया गया। शिविर के समापन सत्र को संबोधित करते शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्ता पं. शिवप्रसाद मिश्र ने कहा कि किसी भी समाज या देश की रीड़ युवा वर्ग को माना जाता है। समाज व देश को बनाने एवं ऊँचा उठाने में युवाओं की विशेष भूमिका होती है।

> समाज व देश को बनाने एवं ऊँचा उठाने में युवाओं की विशेष भूमिका होती है।

इससे पूर्व देव संस्कृति विवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि मनुष्य में साहस, संयम जैसे कई सदुण विद्यमान रहते हैं। उनके सहारे मनुष्य अपनी आंतरिक विभूतियों को विकसित कर सकता है। बाल्यकाल से यदि सही दिशा में मेहनत करना प्रारंभ कर दे, तो युवावस्था में बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है। दूसरों की सेवा, सहयोग कर पुण्य कमा सकता है। उन्होंने कहा कि इस विषम वेला में ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा, आत्म विश्वास एवं भगवान पर भरोसा के लिए अपने नागरिक कर्तव्य को निभाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सदुणों के साथ ईमानदारी को अपनाने से ही भविष्य उज्ज्वल हो सकता है।

शिविर समन्वयक व युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री केदार प्रसाद दुबे ने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में गुजरात प्रांत के 35 जिलों के चार सौ से अधिक चयनित युवाओं ने भागीदारी की। जिन्हें बौद्धिक व सामाजिक गतिविधियों के सैद्धांतिक व प्रायोगिक प्रशिक्षण दिये गये। गंगा तट पर सामूहिक ध्यान के माध्यम से मन को एकाग्र करने की विधि सिखाई गयी, तो वहीं समूह चर्चा के अंतर्गत कार्यक्रमों के संचालन में आने वाली संभावित समस्याओं के निराकरण के सूत्र बताये गये। मोडासा गुजरात से आये किरीट भाई व हरीश भाई कंसारा ने बताया कि शिविर के माध्यम से युवाओं को सकारात्मक दिशा मिली, जिससे वे अपने-अपने क्षेत्र में नशा निवारण सहित विभिन्न कुरीतियों के निवारण के लिए पहल कर सकेंगे।

दे.सं.वि.वि. ने किये कई अनुबन्ध

रवि

देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने अपनी संस्कृति को देश ही नहीं बल्कि विश्व के कई हिस्सों में प्रसारित करने के लिए विश्व के कई विवि के साथ अनुबंध किये। इन अनुबंध के जरिये यहाँ के विधार्थी विदेशों में स्थापित विवि से भी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। विचारधाराओं के बीच संवाद स्थापित करने के तरीके विकसित किये जाये जो संपूर्ण मानवता को इन संकटों से बचा कर शांति स्थापित कर सके आदि विषयों पर अनुबंध स्थापित किये गये।

संयुक्त राष्ट्र की संस्था ग्लोबल कोवोर्नेन्ट के साथ देसंविवि का एम.ओ.यू. सम्पन्न हुआ। इस सद्भावनापूर्ण सामंजस्य के उपरांत डॉ. पण्ड्या ने उन्हें विवि के सभी विषयों एवं यहां के मुख्य उद्देश्य से परिचित कराया। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के सिद्धांतों द्वारा धार्मिक समस्याओं के समाधान परख दृष्टिकोण को किस तरह सामान्यजन तक पहुंचाया जाय।

देसंविवि एवं सेन्ट कैथरिन विश्वविद्यालय यू.एस.ए.के बीच एम.ओ.यू. हुआ है। एम.ओ.यू. के अनुसार वर्तमान समय एवं आने वाले भविष्य को देखते हुए कई विषयों पर इस सामंजस्य को केन्द्रित किया गया है। इसी क्रम में इस वर्ष 20 विद्यार्थियों का दल शिक्षा एवं शोध हेतु देसंविवि आया है। इस प्रोजेक्ट कार्य का मुख्य उद्देश्य शैक्षणिक आदान-प्रदान के साथ-साथ शिक्षा के नये आयामों को नई दिशा देना है।

देसंविवि में अंतर धार्मिक अनुबंध पर विशिष्ट परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रो. डगलस ने कहा कि आज वैश्विक समाज में अपराध की मनोवृत्ति, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, बीमारियाँ जैसे तत्व बढ़ रहे हैं। साथ ही मानवीय तथा सांस्कृतिक मूल्य भी विकसित हो रहे हैं। प्रो. लियोनार्ड ने अपनी पांच दिवसीय यात्रा में अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी व प्रबंध न्यासी श्रद्धेया शैल जीजी से भी मुलाकात की। उन्होनें गायत्री परिवार के सप्तन्दोलनों की प्रशंसा करते हुए कहा कि ये सभी कार्य विश्व-समाज के कल्याण के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति के सिद्धान्त वसुधैव कुटुंबकम की व्याख्या की।

शिक्षा में नए प्राण फूंकने का समय

शिक्षा केंद्र जो नई पीढ़ी की निर्माण स्थली हुआ करते थे, आज कहाँ जा रहे हैं, विचारणीय है। शिक्षा के उच्चतर केंद्र, विश्वविद्यालयों से हमेशा विशेष आशा रही है। हर युग में परिवर्तन के ये महान केंद्र रहे हैं। कभी नालन्दा-तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय भारत की गौरव-गाथा का बखान विश्वभर में किया करते थे।

लेकिन देश के उच्चतर शिक्षा केंद्रों को निहारें तो निराशा होती है। अधिकांश शिक्षण संस्थान व्यवसाय के अड्डे बने हुए हैं। यह भी कुछ हद तक समझा आता है अगर वहाँ स्तरीय शिक्षा दी जा रही हो। लेकिन अपनी जड़ों से कटे, राष्ट्रीय स्वाभिमान, संस्कृति के ज्ञान से शून्य पीढ़ी जब यहाँ से तैयार होने लगती है, तो स्थिति दुखद और चिंताजनक हो जाती है।

इस विषबेल को पनपते नहीं देखा जा सकता। लगता है कहीं नीति निर्धारकों एवं देश के शासन में कहीं मौलिक त्रुटि रह गई। इसके साथ विश्व रैंकिंग में भारतीय विश्वविद्यालयों की पिछड़ी स्थिति कोई आश्चर्य की बात नहीं है। शिक्षा एक ओर गुणवत्ता के मानकों पर खरा नहीं उतर रही है, दूसरा युवाओं पर अपने पैर पर खड़ा होने में सक्षम नहीं बना पा रही है। ऐसे में शिक्षा केंद्र बेरोजगारों की फौज खड़ा करने की फेक्ट्रियां बन गए हैं।

(शिक्षा के साथ हम श्रम की गरिमा का पाठ नहीं पढ़ा सके, जो पढ़े-लिखे युवा खेती से लेकर स्वतंत्र रोजगार के साधन मुहैया करा पाते। हालाँकि स्किल इंडिया के माध्यम से ऐसी पहल हो चुकी है, लेकिन इसे विश्वविद्यालयों एवं शिक्षा केंद्रों से जोड़कर गति देना अभी बाकी है। इसको हटाया जा सकता है।)

दिशाहीन युवक या तो नशे का शिकार हो रहे हैं, या राजनैतिक औजार के रुप में इस्तेमाल हो रहे हैं। आए दिन शिक्षा केंद्रों में उपद्रव, तोड़-फोड़, घेराबंदी की घटनाएं युवा ऊर्जा के कुनियोजन को दर्शाती हैं। विद्यार्थियों के साथ शिक्षकों के कारनामे भी यदा-कदा शर्मसार करते रहते हैं। जबकि युवा पीढ़ी को सही दिशा देने का गुरुत्तर कार्य शिक्षकों के ऊपर है।

यदि शिक्षक अपनी भूमिका ईमानदारी पूर्वक निभाने के लिए संकल्पित हो जाए तो वर्तमान शिक्षा की दशा पलटते देर न लगे। मिलजुलकर आचारवान शिक्षकों एवं प्राणवान विद्यार्थी द्वारा ऐसा भावप्रवाह पैदा किया जा सकता है, जिससे जीर्ण-क्षीर्ण हो रही शिक्षा व्यवस्था में नए प्राण फूँकें जा सकें। देवसंस्कृति विश्वविद्लाय में ऐसी कुछ पहल शुरु हो चुकी है। क्या आप इसका हिस्सा बनने के लिए तैयार हैं?

जरा सोचें

अधिकांश शिक्षण संस्थान व्यवसाय के अड्डे बने हुए हैं। यह भी कुछ हद तक समझा आता है अगर वहाँ स्तरीय शिक्षा दी जा रही हो। लेकिन अपनी जड़ों से कटे, राष्ट्रीय स्वाभिमान, संस्कृति के ज्ञान से शून्य पीढ़ी जब यहाँ से तैयार होने लगती है, तो स्थिति दुखद और चिंताजनक हो जाती है। इस विषबेल को पनपते नहीं देखा जा सकता। लगता है कहीं नीति निर्धारकों एवं देश के शासन में कहीं मौलिक त्रुटि रह गई।

ज्ञानदीक्षा से दीक्षान्त की यात्रा

सम्पादक की कलम से

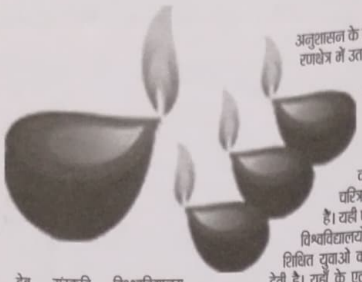

देसंविवि के पास आउट विद्यार्थी फील्ड में अपने पेशेवर ज्ञान के साथ उत्कृष्ट आचरण-व्यवहार, श्रम एवं चरित्रनिष्ठा के लिए जाने जाते हैं। यही पहचान उन्हें अलग-अलग विश्वविद्यालयों से निकल रही डिग्रीधारियों की भीड़ में अलग पहचान देती है। यहाँ के एल्यूमनी विवि की बहुमूल्य थाती हैं, जो देवसंस्कृति के संदेशवाहक के रूप में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में समाज एवं राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं, जिसका व्यवस्थित डॉक्यूमेंटेशन और मूल्यांकन किया जाना अभी शेष है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, कुलपिता पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के विजन पर आधारित शिक्षा के क्षेत्र में एक अभिनव पहल है। जहां शिक्षा के साथ विद्या का संगम-समन्वय किया जा रहा है। रोजगारपरक शिक्षा के साथ मूल्यपरक शिक्षण इसकी विशेषता है, जो आचार्यश्री के शिक्षा के सर्वांगीण दर्शन को पुष्ट करता है। जीवन मूल्यों का आदि बीजारोपण जहाँ ज्ञानदीक्षा के माध्यम से किया जाता है, वहीं इसे अगले विविध चरणों में आवश्यक पोषण दिया जाता है।

परिसर का स्वच्छ, हरित एवं सात्विक वातावरण गंभीर अध्ययन एवं शोध को शक्य बनाता है। जीवन प्रबन्धन की नियमित कक्षाएं व्यक्तित्व विकास के समग्र पहलूओं को प्रकाशित करती है। इसके अन्तर्गत जीवन शैली प्रबन्धन, समय प्रबन्धन, भावनात्मक विकास, रचनात्मक उत्कृष्टता, व्यवहार समायोजन एवं कौशल, चरित्र निर्माण, आध्यात्मिक उत्कर्ष तथा समग्र सफलता के सूत्र सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक रुप में सिखाए जाते हैं।

कुलाधिपति की साप्ताहिक गीता-ध्यान कक्षाएं इसमें आध्यात्मिक रंग घोलती हैं। नवरात्रि काल में जो विशेष रुप लिए होती है, जिनमें आध्यात्मिक ग्रंथों के सार को सरल एवं व्यावहारिक रुप में प्रस्तुत किया जाता है। सामाजिक इंटर्नशिप के साथ यह शिक्षा समाज के साथ जुड़कर और व्यावहारिक और व्यापक रुप लेती है। इस तरह जीवन विद्या के आलोक केन्द्र से एक विद्यार्थी कठोर तप-अनुशासन के साँचे में ढलते हुए जीवन के रणक्षेत्र में उतरने के लिए तैयार होता है।

आश्चर्य नहीं कि देसंविवि के पास आउट विद्यार्थी फील्ड में अपने पेशेवर ज्ञान के साथ उत्कृष्ट आचरण-व्यवहार, श्रम एवं चरित्रनिष्ठा के लिए जाने जाते हैं। यही पहचान उन्हें अलग-अलग विश्वविद्यालयों से निकल रही डिग्रीधारी शिक्षित युवाओं की भीड़ में अलग पहचान देती है। यहाँ के एल्यूमनी विवि की बहुमूल्य थाती है, जो देवसंस्कृति के संदेशवाहक के रुप में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप में समाज एवं राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं, जिसका व्यवस्थित डॉक्यूमेंटेशन और मूल्यांकर किया जाना अभी शेष है। इस दीक्षान्त समारोह में इस विषय पर विशेष विचारमंथन हो रहा है, जिससे उम्मीद है कि देसंविवि की शैक्षणिक गुणवत्ता में एक नया आयाम जुड़ेगा।

दीक्षान्त समारोह इन्हीं पास आउट छात्र-छात्राओं को विधिवत ढंग से डिग्री आवंटित करने एवं पुरस्कृत करने का एक पावन अवसर है। यह विश्वविद्यालय परिसर के कठोर अनुशासन में उपलब्ध शिक्षा और विद्या के मधुर फल को चखने का समय है। यहाँ से अलग-अलग क्षेत्रों में निकलने के बाद बिछुड़े साथियों-सहपाठियों से मिलने व अपने गुरुजनों-आचार्यों को कृतज्ञता ज्ञापित करने का भी यह सुअवसर है।

और जब किसी अपने क्षेत्र में चुड़ाँत उपलब्धि प्राप्त विशेषज्ञ के सानिध्य में यह आयोजन हो रहा हो तो इसका महत्व बहुगुणित हो जाता है। निसंदेह रुप में दीक्षान्त समारोह हर विद्यार्थी के लिए एक यादगार अवसर होता है। इस बार नोबुल पुरस्कार विजेता डॉ. कैलाश सत्यार्थीजी की पावन अध्यक्षता में यह अवसर सभी प्रतिभागियों के लिए एक अमूल्य अवसर बनने वाला है। इसके साथ राज्य के राज्यपाल महामहिम डॉ. कृष्णकांत पाल के गरिमामयी उपस्थिति इसमें नया रंग घोलने वाली है।

अपने नाम के अनुरुप दीक्षान्त सुनने में तो ली गई दीक्षा का अन्त प्रतीत होता है, लेकिन वास्तव में यह ऐसा है नहीं। अमुक डिग्री मिलने के साथ यह एक नए अध्याय का पटाक्षेप भी है। यहाँ से प्राप्त ज्ञान को जीवन में उतारने व इसका समाज के उपयोग में वितरण एक जीवन पर्यन्त प्रक्रिया है। यहाँ से प्राप्त मूल्य एवं विचार प्रोफेशन एवं व्यवहारिक जीवन की कसौटियों पर कसा जाना बाकी है। कुलमिलाकर देसंविवि के स्नातक, परास्नातक या दीक्षित शिक्षित युवा के रुप में देवसंस्कृति के संदेशवाहक बन जीवन के रणक्षेत्र में उतरने की यह संकल्पित तैयारी है। ज्ञानदीक्षा समारोह की तरह एक बार पुनः विवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं शांतिकुंज अधिष्ठात्रि शैलदीदी के शुभाशीष को पाने की पावन घड़ी है।

इस तरह देवसंस्कृति विवि की ज्ञान दीक्षा से दीक्षान्त की प्रक्रिया से गुजरा हर प्रतिभागी विद्यार्थी देवसंस्कृति का दूत है, सकारात्मक परिवर्तन का संवाहक है। कुलपिता की युग परिवर्तनकारी सकल्पना के अनुरुप हम बदलेंगे, युग बदलेगा की विचार क्रांति मशाल का संवाहक है। अपने-अपने क्षेत्र में कुछ विशिष्ट समाजोपयोगी कार्य उनसे सम्पन्न होंगे, ऐसी विश्वविद्यालय की आशा-अपेक्षा है। उम्मीद है कि ये आशाएं साकार होंगी और हम ऐसा कुछ मिलजुलकर करेंगे जिससे देवसंस्कृति विवि का आलोक विश्व के कोने-कोने तक विस्तारित हो और उज्जवल भविष्य की संभावनाएं साकार होने लगे।

शालीनता सदैव प्रभावी होती है

प्रेरक प्रसंग

सरदार विट्ठलभाई पटेल भारतीय लेजिसलेटिव असेंबली के प्रेसीडेंट थे। एक दिन वे असेंबली के कामों से निवृत होकर घर जाने को ही थे कि एक अंग्रेज दंपती विलायत से भारत घुमने आए। पटेल की लंबी दाढ़ी और सफेद वस्त्र देखकर अंग्रेज दंपती ने उन्हें वहाँ का चपरासी समझा और ऐसेंबली घुमाने के लिए कहा।

पटेल बड़े ही विनम्र, सज्जन और कुशल प्रशासक थे। अंग्रेज दंपती का आग्रह वे टाल न सके। उन्होनें साथ रहकर पूरा असेंबली भवन घुमाया।

अंग्रेज दंपती बहुत खुश हुए और लौटते समय उन्हें बख्शिश के बतौर एक रूपया देना चाहा, किंतु श्री पटेल ने बड़े नम्र शब्दों में इनकार कर दिया। अंग्रेज दंपती वहाँ से चले गये।

दूसरे ही दिन असेंबली की बैठक थी। दर्शकों की गैलरी में बैठे अंग्रेज दंपती ने जब सभापति के आसन पर दाढ़ी एवं सादे वस्त्रों वाले सज्जन को बैठे देखा तो वे दंग रह गये और अपनी भूल पर पश्चाताप करने लगे कि जिसे वे चपरासी समझते थे, वे सज्जन तो लेजिसलेटिव असेंबली के प्रेसीडेंट हैं।

प्राण लेकर आज लहरों में उतरना ही पड़ेगा...

पार करना चाह्ते हो इस गरजते सिंधु को यदि,
प्राण लेकर आज लहरों में उतरना ही पड़ेगा।

यह तरंगे दूर से चलकर तुम्हारे पास आती,
उस नए जग के नए संदेश अपने साथ लाती।।

फूल पर बैठे और मनन करते रहोगे कब तक,
उस पार वीणा-ए-मधुर तुमको बुलाती।

चाह्ते हो तुम यदि नया जीवन, नया यौवन, नया मन,
आज बाहों में उमड़ता सिंधु भरना ही पड़ेगा।

तुम नया विश्वास लेकर पग बढ़ाओ आज अपना,
तुम नया इतिहास लेकर दृग उठाओ आज अपना।।

छूट जाने दो बहुत पीछे इस पुराने गगन को,
तुम नया आकाश लेकर जग सजाओ आज अपना।

प्राण में यदि रहे मुखरित नए निर्माण के स्वर,
आज कण-कण का नया श्रृंगार करना ही पड़ेगा।।

यह प्रलय की पीर ही नवसृष्टि का मधुगान होगी,
यह तिमिरता ही सूर्य की दिशा का वरदान होगी।

इस पुरातन जड़ जड़ित मूर्ति को अब तुम टूटने दो,
जिस शीला पर हाथ रखदो वहीं वरदान होगी।।

तुम हिमालय के सृजन हो सिंधु की गहराई ही क्या,
आज पंखो में असीमित व्योम भरना ही पड़ेगा।

पार करना चाह्ते हो इस गरजते सिंधु को यदि,
प्राण लेकर आज लहरों में उतरना ही पड़ेगा।।

\- एक शिष्य

कार्यकारी संपादक - डॉ. सुखनन्दन सिंह

रिपोर्टिंग हेड - दीपक कुमार

पृष्ठ सज्जा एवं डिज़ाइन - राहुल कुमार सतुना

सहायक टीम - मुकेश बोरा, सौरभ कुमार, अनितांजली मिश्रा, माधुरी गौड़

आपकी पाती

Paper looks nice & convenient for reading

I liked the newspaper, it looks nice and the articles are very much convenient for reading. Sometimes, its good to read the news of the event that happened it the University like the inauguration of the Baltic Center. This newspaper also give us an opportunity to know about the university.

Irina, Russia
Yogic Certificate Program, DSUU

ताजगी का अहसास देता पत्र

संस्कृति संचार पढ़ते हैं तो एक ताजगी का अनुभव होता है। देसंविवि की नवीन सूचनाओं के साथ हर अंक में स्वास्थ्य, रचनात्मक कार्यों एवं उपयोग टेक्नोलॉजी सम्बन्ध जानकारी मिलती है। युगऋषि के आदर्शों को संजोयें यह पत्र हमारे विचारों के साथ हृदयों को भी छूता है, जिसकेलिए हम इसके सम्पादक मंडल के आभारी हैं।

\- डॉ. विरल, ट्रेनिंग सेल, देसंविवि

I enjoy the colorful and diverse content

I enjoyed the colorful and diverse contents in the Sanskriti Sanchar. It provided a wealth of information about the mission and values of the University as well as the recent news and activities going on at DSUU. I hope to get more informative and interesting content in coming issues.

Jennifer Ka, United States,
Yogic Certificate Program, DSUU

An impressive paper by DSUU students

The *Sanskriti Sanskriti* is an impressive newspaper made by the students of DSUU. I enjoyed the collection of photos along with useful article regarding the University and recent events. It is intererresting to see students actively involved in its production.

Tsering Lhamo, Tibet, Yogic Certificate Program, DSUU

बहुत ही ज्ञानवर्धक समाचार पत्र

संस्कृति संचार एक बहुत ही ज्ञानवर्धक समाचार पत्र है। लेकिन इसमें कुछ सुधार किए जाएं तो इसमें और निखार आ सकता है। इसे और रोचक बनाने के लिए इसमें समाचारों का विश्लेषण दिया जा सकता है। विवि एवं शांतिकुंज के उत्पादों के विज्ञापन दिए जा सकते हैं, जिससे सभी तक इनकी जानकारी पहुंचे।

\- डॉ. राकेश वर्मा, प्रवक्ता, योग-विज्ञान

Medium of positivity & good thoughts.

Sanskriti Sanchar is a medium of positivity. Paper updates about various events and activities conducted in the campus through the perspective of student. The effort is surely worth appreciating. It is truly of the students, by the students and for the students in nature.

Mrs. Neha Bhavsar, Scientific Spirituality, DSUU

विश्वविद्यालय से हमने क्या पाया?

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय युगऋषि के मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण के संकल्प का शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांति उद्घोष है जो व्यक्ति के सर्वांगीण उत्कर्ष से लेकर सामाजिक विकास की प्रबल प्रेरणा हर पल भरता रहता है। शिक्षा के साथ संस्कारों की इस प्रयोगशाला में रोपी गई पौध क्रमशः विकसित होते हुए अपनी भूमिका में मुखर रूप ले चुकी है। यहाँ के विद्यार्थी हर क्षेत्र में अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज कर रहे हैं और देवसंस्कृति के संदेशवाहक के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। प्रस्तुत है ऐसे ही युवकों से लिए गए साक्षात्कार के आधार पर भाव-उद्गार कि देवसंस्कृति विश्वविद्यालय से उन्होंने क्या पाया।

DSUU - a lab for the inner transformation of an individual

Sanjeev Yadav
Yoga Deptt

Dev Sanskriti Vishwavidyalaya is not merely a University but a lab which includes all the essentials for the real transformation in an individual. It has been 9 years since I joined this University. For a true seeker the ambience of this University is capable enough of mold into an awakened soul. It takes time and perseverance but the result is quite astonishing and deal breaking. The journey that you've chosen at this university manifests the true potential within you and helps you to explore your real Self. This aspect is inevitable as only and only your real Self has the capability to overcome all of your worldly problems which are the mere reflections of your imperfections that seems to appear in the form of miserable life situations. Once you are able to acknowledge this matrix, you reside in eternal bliss. And yes, this University does guarantee a real transformation, if you align your free will with its objectives and ambience.

- Sanjeev Kumar Yadav, M.A. Yoga (2009-14), Faculty

यह केवल विश्वविद्यालय न होकर एक परिवार है

ज्योति मालवी
देसंविवि

विश्वविद्यालय ने जो दिया उसे शब्दों में कह पाना मुश्किल है। फिर भी, यदि कहें तो यह केवल एक विश्वविद्यालय न होकर एक परिवार है। यह आत्मीयता, सद्भावना और सभी को साथ लेकर चलने की भावना से ओत-प्रोत। यहां पढ़कर-रहकर कभी अपने आप को कोई अकेला नहीं महसूस कर सकता। साथ ही विश्वविद्यालय में समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम होते रहते हैं जो बौद्धिक विकास के साथ व्यक्तित्व का सार्वांगीण विकास करते हैं। इन कार्यक्रमों में विभिन्न संस्कृतियों का यहां समावेश होता है, जिससे हमें उन्हें समझने, जानने का अवसर मिलता है। वास्तव में यहां सम्पूर्ण भारत की झलक मिलती है। विश्वविद्यालय की हर गतिविधि हमारे जीवन को गढ़ने का काम करती है। सुबह से शाम तक की दिनचर्या के माध्यम से हर विद्यार्थी अपने जीवन में हो रहे बदलाव को महसूस करता है। किताबी ज्ञान के साथ जीवन के मर्म को समझने के लिए गीता व ध्यान की कक्षाएं होती हैं जो हर विद्यार्थी के जीवन में नए आयामों को विकसित करने का काम करती है। शिक्षा जगत में यह अपने आप में एक अनूठा प्रयोग है जो देश के सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है। आज देश में ऐसे और अनेक प्रयोगों की दरकार है।

-ज्योति माल्वी, एम.ए.योग(2006-11), फेकल्टी

देसंविवि - ज्ञान से सींचती और पोषित करती माँ

ओमप्रकाश तेजरा
धर्मविज्ञान, देसंविवि

मेरे लिए देव संस्कृति विश्वविद्यालय, मेरा आत्म गौरव है, आत्म अभिमान है। यह वह धरातल है जहां से हमें जीरो से हीरो तक की वो सभी कलाएं सिखाई जाती हैं, जो मानवीयता की दृष्टि से आवश्यक हैं। यह एक अनुपम, अविस्मरणीय और दैवीय प्रभात जो स्वर्ग का जीवन्त आभास कराता है। यह अकल्पनीय संसार है, संकल्प भूमि है, जहां पर क्रिया, श्रम कभी निरर्थक नहीं जा सकता। ऐसा मेरा अनुभव है और द्रढ़ एवं अडिग विश्वास भी है। यह युनिवर्सिटी मां के समान है जो ज्ञान से मुझे सींचती और पोषित करती है। यहां आकर परिवार का वृहद रूप मिला। सभी से अपनापन, हंसती-खेलती, मुस्कुराती, झूमती सुबह और लोरी गाती शाम। खानदान सहयोगी व अपनों से बढ़कर भाई। योग्यता का विकास मिला। भविष्य का शानदार जीवन। वर्तमान में शानदार जीवन। भौतिक योग्यताएं। सबसे बढ़कर आध्यात्मिक जीवन का अहसास जो मेरी आंतरिक आकांक्षा थी। इस सब के साथ विश्वविद्यालय ने हमें एक नई सोच दी, ताकि हम औरों के बारे में भी सोच सकें। समाज के लिए कुछ करने की भावना और दूसरों के हित में अपना हित देखने का भाव पैदा किया। आज मेरे जैसे अनेक लोग मिल जाएंगे, जिनके जीवन में विश्वविद्यालय ने क्रान्ति का संचार कर दिया। यह स्थान केवल पढने-पढाने तक सिमित नही रहता है यह व्यक्तिव को गढने की एक प्रयोगशाला है।

-ओमप्रकाश तेजरा (2005-6), धर्मविज्ञान, प्रवक्ता

अद्भुत, असाधारण, अद्वितीय विश्वविद्यालय

संजय श्रीवास्तव
छात्र, देसंविवि

परम पूज्य गुरूदेव एवं वंदनीय माता जी के आशीर्वाद से देव संस्कृति विश्वविद्यालय में रहकर बी. एड. करने का सुनहरा मौका मुझे गुरूदेव की जन्म शताब्दी के ठीक बाद वर्ष 2012 में प्राप्त हुआ। विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान मैने अपने एक भी क्षण को बर्बाद न करते हुए विभिन्न तरह के पाठ्यक्रम जैसे एकवर्षीय पी. जी.डिप्लोमा इन योग, एंकरिंग, ढपली, संगीत, विज्ञान विषय पर विभिन्न तरह के कार्यशाला व शैक्षिणिक भ्रमण को किया। माँ आनन्दमयी भोजनालय का प्रसाद स्वास्थ निर्माण के साथ-साथ चरित्र और चिंतन के निर्माण में अहम भूमिका निभाते रहे। अद्भूत, असाधारण, अद्वितीय शिक्षक और बच्चों के प्रति प्रेम एवं निरंतर कठिन परिश्रम ने हमारे जीवन में मानो चार-चाँद लगा दिया। भविष्य सुनहरे पल के लिए अग्रसर और देखते ही देखते एक वर्ष का समय कब बीत गया पता ही नही चला। आज मै तीन वर्षो से अपने स्थानीय शहर आरा बिहार के जाने-माने प्रतिष्ठित विद्यालय डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल मील रोड़ आरा में गणित सहयोग शिक्षक के रूप में कार्यरत हूँ। मुझे तो ऐसा ही लगा कि हमारे तीस वर्ष के पहले अर्थात पूरे जीवन का समय एक तरफ और देव संस्कृति विश्वविद्यालय में एक वर्ष की यदि तुलना की जाये तो निश्चित रूप से एक वर्ष गुरूदेव के आँगन में बिताये पल भारी पड़ेगे। - संजय कुमार श्रीवास्तव, बीएड, 2012 , वर्तमान - गणित सहयोग शिक्षक

DSUU is like Mother to me

Ved Praksh Thawait

The atmosphere of DSVV is natural and spiritual ideal for academic excellence. Life Management Classes, especially Geeta and Dhyan Classes by Shraddhey helped me a lot to become more mature and balanced in life. The concept of Social Internship Program of DSVV is my third wonderful experience. Social internship gave opportunity to serve the society and find out your innet potential. The cultural and the Extracurricular activities gave opportunity to learn management skill. Overall I would like to say, there is a need for an educational institution which could mould its students into noble and enlightened human beings.(Pt. Shri Ram Sharma Acaharya) and DSVV is one of that institutions. Really it is a Modern Spiritual Educational Institute of Moral, Ethical and Spiritual Awakening for Students. DSVV is like Mother for me and I am Proud to be a student of DSVV. - Ved Prakash Thawait, BSc, CS 2008-13, PPD, Shknj

हृदय की आवाज के साथ आगे बढ़ने का साहस देता विवि

बसंत बल्लभ पांडेय
शोध छात्र, देसंविवि

देव संस्कृति विश्वविद्यालय दिव्य भारत के निर्माण की प्रयोगशाला है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने मुझे क्या दिया, इसके बजाय वास्तव में मेरे लिए सही प्रश्न है कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय से आप क्या ग्रहण कर पाए? क्योंकि बहुत सम्भव है कि मै विश्वविद्यालय के महान आदर्शों व अभ्यासों को पूरी तरह आत्मसात करने में सफल न हो पाया हूँ, परन्तु फिर भी मुझे व्यक्तिगत मानवीय जीवन को समझने में, लक्ष्यों को तय करने में और उन्हें हासिल करने में अंतरतम तक प्रभावित किया है। व्यक्तिगत जीवन का परिष्कार ही पारिवारिक और सामाजिक जीवन को बेहतर बनाने का आधार है, इस सत्य को मैने यहीं अनुभव किया। अपने हृदय की आवाज के साथ आगे बढ़ने का साहस और योग्यता मैने यहाँ ही अर्जित की। देश में जहां युवा रोजगार के अभाव में मूल्यों व नीतियों का त्याग कर रहा है, मुझे इस विश्वविद्यालय ने रोजगार सृजन करने योग्य बनाया।

मुझे गर्व है देवसंस्कृति विवि के स्नेहमय वातावरण, समर्पित आचार्यगण एवं जीवन की सबसे आवश्यक आवश्यकता को पूर्ण करती शिक्षा प्रणाली पर।

- डॉ. बसंत बल्लभ पांडेय, एम.ए. योग, 2007-09,फाउंडर, द योगा लैब, राजकोट, गुजरात

प्यार जो आज भी हमें पुलकित करता है

नेपाल के बहुत ही दुर्गम और बहुत ही सामान्य परिवार से देसविवि में अध्ययन का अवसर मेरे लिए महाकाल स्वरुप गुरुसत्ता की कृपा से कम नहीं था। यहाँ पर अंग्रेजी सर्टिफिकेट व एम.ए.योग विज्ञान में 3 वर्षीय प्रवास मेरे जीवन का सर्वाधिक स्वर्णिम समय रहा। विवि का भव्य स्वरुप एवं दिव्य वातावरण स्वयं में अद्वितीय है। प्रातः 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक की दिनचर्या के बीच नैष्ठिक अध्ययन ने हमें विषय का निष्णात बनायाए जिसका फल स्वर्ण पदक रहा, जो पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के हाथों मिला। नियमित कक्षाओं के साथ आर्ट ऑफ लिविंग कक्षाएं, प्रातःकालीन यज्ञ, साप्ताहिक श्रमदान, हर पर्वोत्सव का नूतन नीति से आयोजन, ये सब मेरे लिए हमेशा अनुप्रेरित करते थे, जिनमें अपनी समर्पित भागीदारी रहती थी। परम श्रद्धेय द्वारा गीता-ध्यान कक्षाएं सबसे प्रिय एवं ज्ञानप्रद रही, जो आज भी हमें आत्मिक मार्गदर्शन करती हैं। श्रद्धेय डॉ. साहब और जीजी का प्यार आज भी हमें पुलकित करता है। इसी विवि से पीएचडी का भी सौभाग्य मिला। सार रुप में मेरे लिए देसविवि ज्ञानदात्री माँ ही है।

डॉ. राजू अधिकारी, योग विज्ञान, 2008-10
योगचार्य एवं लाइफ कोच, मोटिवेसनल स्पीकर

विश्वविद्यालय ने मेरे सपनों को नई उड़ान दी है।

मै पिछले कुछ सालों से उत्तर प्रदेश सरकार के साथ शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रही हूँ। 2007 से 2012 तक देव संस्कृति विश्वविद्यालय में पहले बीए एवं फिर पत्रकारिता एवं जनसंचार की विद्यार्थी रही। आज जिस तरह मैं अपना और अपने कार्य का परिचय दे रही हूँ, मुझे यहाँ तक पहुचाने और मेरा आत्मविश्वास बढ़ाने में विश्वविद्यालय परिवार का बहुत योगदान रहा है। विश्वविद्यालय ने मेरे सपनों को नई उड़ान दी है। इसके परिसर में 5 सालों तक रह कर मैंने न सिर्फ शिक्षा ग्रहण की, बल्कि यहाँ जीवन जीने का सही तरीका सीखा और इस बात को गहराई से समझा कि छोटे-छोटे प्रयासों से भी समाज में बढा बदलाव लाया जा सकता है। विश्वविद्यालय की इसी सीख के साथ शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव के लिए प्रयासरत हूँ। आज देश में शिक्षा के क्षेत्र में इस प्रकार के प्रयोगों की आवश्कता है जो न केवल पढाई की बात करें बल्कि समाज के उत्थान का मंत्र भी देते हों। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय ऐसी मूल्यपरक एवं समाजोपयोगी शिक्षा की दिशा में कार्य करने वालों के लिए प्रेरणा पुंज है।

नीतु शाही, बीए, 2007-10 एवं पत्रकारिता एवं जनसंचार, 2010-12
शिक्षक- प्रशिक्षक

भव्य स्वरुप एवं दिव्य वातावरण स्वयं में अद्वितीय

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना मेरे लिए पुनर्जन्म से कम नहीं था। वो पल मुझे आज भी याद है, जब प्रवेश परिक्षा के बाद रिजल्ट में अपना नाम देखकर मानो अन्धकार से प्रकाश की ओर आ गया। वास्तव में मुझे देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने विचार क्रान्ति रुपी बीज हमारे मन में बो दिया जो समय के साथ पौधे से वृक्ष की ओर बढ रहा है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक अध्यात्मवादी वातावरण ने मुझे इस भौतिकवादी दुनिया से लडने की ताकत दी। युवा पीढी और समाज के लिए जीना सिखाया। इस समय में राजस्व उपनिरिक्षक के रुप में कार्यरत हूँ। इसके साथ-साथ ग्रामीण युवाओं के सही शिक्षा एवं नैतिक उत्थान के लिए कॉम्पिटीशन प्लस नामक संस्था भी चला रहा हूँ। इसके साथ ही मैं भारतीय सिविल सेवा परिक्षा की तैयारी भी कर रहा हूँ।

हर रगो हर साँसों में बसा इस तरह से जिधर भी जाएंगे तुम्हारे ही विचार फैलायें।
पाला पोसा इस तरह से कि हर कदम सृजन की ओर बढते जाएंगे।

प्रज्ञेश चौरासिया, मनोविज्ञान, 2011-13 छात्र.
वर्तमान, राजस्व उपनिरीक्षक

संस्कृति संचार, फरवरी - 2018

देव संस्कृति विश्वविद्यालय का प्रथम दीक्षान्त समारोह नवंबर 2004 में भारत के तत्कालीन उप राष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर योग, मनोविज्ञान, समग्र स्वास्थ्य प्रबन्धन, धर्म विज्ञान एवं अंग्रेजी पाठ्यक्रमों में उत्तीर्ण 329 विद्यार्थियों को उपाधि, डिप्लोमा एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। **द्वितीय दीक्षान्त समारोह** दिसंबर 2006 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ जिसमें विभिन्न पाठ्यक्रमों में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की गई। इसमें पहली बार डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधी प्रदान की गई।
तृतीय दीक्षान्त समारोह दिसंबर 2009 में उत्तराखंड के तत्कालीन राज्यपाल मार्गरेट आल्वा की उपस्थिति में सम्पन्न हुई जिसमें 19 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक, 53 को पीएचडी, 348 को स्नातकोत्तर व 105 को स्नातक 117 को पीजी डिप्लोमा तथा 469 को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।
चतुर्थ दीक्षान्त समारोह दिसंबर 2014 में ... की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ, जिसमें विभिन्न पाठ्यक्रमों ... पदक व 77 को पीएचडी की उपाधी प्रदान की गई ... पद्मश्री, गुजरात की विजय सहगुप्ता उपस्थित ...
पंचम दीक्षान्त समारोह, 15 अप्रैल, 2017 ... पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी की ... यह आयोजन प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए ...

देसंविवि के विद्यार्थी बनें संस्कृति के सच्चे दूत

प्रथम दीक्षान्त समारोह

शिक्षा के साथ संस्कार देने का सराहनीय कार्य

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय को शिक्षा के साथ संस्कार देने का सराहनीय कार्य कर रहा है। अपनी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत से दूर होती पीढ़ी के लिए इसके पाठ्यक्रम एवं कार्यक्रम उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। ...

... पतिव्रत महत्वपूर्ण संस्कृति केन्द्र के रूप में विश्वविद्यालय की आवश्यकता है ... भारतीय संस्कृति, भारतीय परम्परा और भारतीय आदर्शों के प्रति लोगों को आकर्षित करेंगे और जीवन में इस प्रकार का परिवर्तन लाने की कोशिश करेंगे कि प्रत्येक व्यक्ति भारत का और भारतीय संस्कृति का प्रतीक बन जाए।

आपको आश्चर्य होगा जानकर कि मुझे ... की दीक्षा और ज्ञान ... प्राप्त हुआ। ... जिनकी प्रेरणा से ... आज ऐसे स्थान पर पहुँचा है। ... आज भी ... ताकि इस शिक्षा के माध्यम से जो क्रान्तिकारी परिवर्तन आ रहा है, उसका भागीदार बन सकूँ।

श्री भैरों सिंह शेखावत,
भूतपूर्व उपराष्ट्रपति, भारत

मूल्य आधारित शिक्षा से देश ...

विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय ...

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि देसंविवि ... आदर्श ... और पूर्ण भारत के निर्माण के ... शिक्षा संस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे युवाओं को मूल्य आधारित शिक्षा ...

तृतीय दीक्षान्त समारोह

परिवर्तन का संवाहक बन उतरें समाज में

उत्तराखण्ड के अंतिम गाँव तक पहुँचने की हो कोशिश

श्रीमती मार्गरेट अल्वा,
राज्यपाल, उत्तराखण्ड

देसंविवि उत्तराखण्ड का पहला निजी विश्वविद्यालय है। समाज की भलाई के लिए आचार्य श्रीराम शर्मा जी ऐसा विश्वविद्यालय चाहते थे जिसमें विद्यार्थी को ऐसी शिक्षा दी जाए जो मानव जीवन की समस्याओं के समाधान में सहायक हो और विद्यार्थी अधिक से अधिक उपयोगी बन सके। इस पृष्ठभूमि में देसंविवि विद्यार्थियों और शिक्षा जगत को नई दिशा प्रदान कर रहा है। मुझे बड़ी खुशी है कि यह विश्वविद्यालय अभी है तो स्टेट यूनिवर्सिटी, लेकिन यहाँ जो काम हो रहा है वह अंतर्राष्ट्रीय यूनिवर्सिटी जैसा चल रहा है। डिस्टेंस एज्यूकेशन का जो काम यहाँ चल रहा है, मुझे आशा है कि वह उत्तराखण्ड के पिछड़े हुए गांव-गांव तक पहुँचाने की कोशिश करेगा।

हमारी साक्षरता दर देश से भी अधिक है, लेकिन आज भी पहाड़ के बहुत से पिछड़े हुए इलाकों में गाँवों में स्कूल ठीक तरीके से चलाना मुश्किल है क्योंकि शिक्षक ऊपर जाना नहीं चाहते।

आप यहाँ से बहुत कुछ लेकर जाएंगे, अपने बारे में ही नहीं सोचेंगे, समाजसेवा के बारे में भी आपको सोचना पड़ेगा, जो इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य है। आप एक परिवर्तन के संवाहक के रूप में यहाँ से समाज में उतरेंगे। समाज कल्याण, सोच विचार में बदलाव के भाव के साथ हमें आधुनिक राज्य उत्तराखण्ड को बनाने की कोशिश करनी होगी।

चतुर्थ दीक्षान्त समारोह

जीवन ...

श्री प्रणव मुखर्जी,
राष्ट्रपति, भारत

हरिद्वार में देवसंस्कृति विवि जैसे ... सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति में ... शैक्षणिक हित है। शिक्षा के साथ ... सोशल इंटर्नशिप के प्रयोग सराहनीय है ... आधुनिक शिक्षा का संगम और ... विद्यार्थियों ने इस विश्वविद्यालय को ... बनाया है। मैं चाहूँगा कि आप सभी ... पर्व जो इसी विश्वविद्यालय से ... श्रीराम शर्मा आचार्य जी की ... चाहूँगा, जिनका संस्कारी शिक्षा और ... दृष्टिकोण इस विश्वविद्यालय की ... बनाए जहाँ अध्यात्म और शिक्षा का ... मेरा यह मानना है कि शिक्षा और ... निर्माण को प्रोत्साहित देती है। मुझे ... साल पुरानी सभ्यता में बहुत विश्वास है। मेरा यह भी मानना है कि आध्यात्मिक ... सही समन्वय करके हम प्रगति पथ पर प्रशस्त हो सकते हैं और मैं देवसंस्कृति विवि ...

युग निर्माण की अलख जगाते प्रयास

विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के बाद सीधे एक फेलोशिप के माध्यम से कार्य करने का अवसर मिला। फेलोशिप के दो वर्षों में राजस्थान के चूरू जिले की राजगढ़ तहसील में लगभग 150 गांवों के युवाओं के साथ सीधा सम्पर्क किया और वहां के समाज में व्यापक जातिवाद, नशाखोरी और भेदभाव के विरोध में युवाओं के दल बनाए। देसंविवि की तर्ज पर पॉलीक्लीनिक अपने जिले श्रीगंगानगर में "विश्व योग भारती" के रूप में साकार करने का प्रयास किया जो आज भलीभांति कार्य कर रहा है। युवाओं के व्यक्तित्व विकास को लेकर विद्यालयों में योग शिविरों का आयोजन शुरू कर दिया। युवाओं में नशावृति के अधिक्य को देखते हुए विशेष नशामुक्ति शिविर भी लगाए गए हैं। भारतीय खेलों को बढ़ावा देने के लिए गांव में कबड्डी, रस्साकस्सी, कुश्ती आदि खेलों को ग्रामीण खेल मेलों के माध्यम से युवाओं के बीच पहुँचा रहे हैं। वृक्षारोपण व स्वाध्याय को प्रमुखता दी जाती है।

देसंविवि की तर्ज पर यहाँ साप्ताहिक रूप से युवावर्ग अपने-अपने गांव में आवश्यकतानुसार श्रमदान करते हैं। इसी प्रेरणा से दर्जनों गांव की श्मशान भूमि आज दर्शनीय स्थल का रूप ले चुकी है। गौमाता के प्रति श्रद्धाभाव जगाने के लिए कई गांवों में युवावर्ग स्वयं अपने पुरुषार्थ से गौशालाओं का संचालन कर रहे हैं। मृत्युभोज, बालविवाह, नशाखोरी जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अभियान चल रहा है। गांव का वार्षिकोत्सव प्रत्येक वर्ष मनाया जाने लगा है। जिसमें सामूहिक साधना, यज्ञ, रक्तदान के शिविर एवं योग व आरोग्य चिकित्सा की जाती है। गांव के मंदिर को केवल पूजा-पाठ तक सीमित न रखकर उसे जन-जागरण के केन्द्र के रूप में स्थापित करने का प्रयास है। समाज के सहयोग से वहां पर पुस्तकालय, बाल संस्कारशाला एवं युवाओं की मासिक गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। जन्म शताब्दी वर्ष में श्री गंगानगर से हरिद्वार तक की यात्रा साईकिल द्वारा लगभग 250 गांवों में विश्व विद्यालय

गांव-समाज को संस्कारी बनाते प्रयास

देसंविवि में एमएससी योग पाठ्यक्रम के दौरान ही लगा था कि अपने गांव में भी युग निर्माण की अलख जगानी है। सोशल इंटर्नशिप के दौरान यह संकल्प और पुख्ता होता गया कि जो काम हम क्षेत्रों में जाकर सफलता पूर्वक किए वह अपने गाँव में भी शुरू कर सकते हैं।

इसी क्रम में गांव में स्वाध्याय मंडल, महिला मंडल की स्थापना हुई। ग्राम महाजागरण एवम् योग शिविर का आयोजन हुआ। इसके अंतर्गत बाल-संस्कारशाला, योग एवम् एक्यूप्रेशर चिकित्सा शिविर, किसानों की गोष्ठी, युवाओं की गोष्ठी, महिलाओं की गोष्ठी, वृक्षारोपण, नशामुक्ति उन्मूलन, दहेज, अन्धविश्वास, विराट साहित्य स्टाल, दिया रजिस्ट्रेशन, अखंड ज्योति सदस्य, कलश प्रभात फेरी, दीपमहायज्ञ, संस्कार आदि कई कार्यक्रम हुए, जिसमें बहुत बड़ी सफलता मिली और विचार क्रांति की चिंगारी पूरे गांव में चल गयी।

अब तक कई जगहों पर दीपयज्ञ, हवन, बाल संस्कारशाला, स्वाध्याय, स्वास्थ्य शिविर, व्यसन मुक्ति रैली, स्वच्छता अभियान, गौ पूजन, नारी जागरण, स्कूलों में योग- नशामुक्ति कार्यक्रम, यू.था.ओ का दिया वर्कशॉप आदि चलते रहते हैं। आज जो छोटा गांव जहाँ कोई जानता नहीं था गायत्री मंत्र, अब शायद ही कोई ही जिसको गायत्री महामंत्र न पता हो। इतनी सारी चीजें बहुत तेजी से होती गयी है गुरूजी के संरक्षण में और आज जब पहले से अब की तुलना करते है तो स्वयं में बहुत बड़ा अंतर पाते है। गुरूजी को समर्पित करके अपने सभी कर्तव्यों का पालन पूरी समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदार और बहादुरी से करने की कोशिश करते रहते है। सब करने की क्षमता, योग्यता भी खुद ही देंगे, ऐसा विश्वास रहता है और होता भी है।

अनुभव, समझदारी, निर्णय क्षमता, आत्म विश्वास, योग्यता, संकल्प शक्ति, समायोजन क्षमता में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। बहुत कुछ सीखते जा रहे है गुरूजी के संरक्षण में विचार क्रांति करते हुए। सोच भी नहीं पाते कैसे कैसे गुरूजी क्या-क्या सीखा देते है, पता ही नहीं चलता।

अंत में इतना ही कहेंगे आप गुरूजी का काम करते रहिए गुरूजी आपका कार्य स्वयं करेंगे। गुरूजी की अनुभूति को शब्दों में नहीं पिरोया जा सकता है।

- वन्दना श्रीवास्तव सलखन सोनभद्र, एमएससी 2012-14।

क्रिएटिविटी के ...

देसंविवि ... पत्रकारिता ... पाठ्यक्रम 2008-9 में ... के बाद फिल्म मेकिंग की ओर ... बचपन से ही अपना सपना था। देसंविवि ... के दौरान ही हास्यकृति आदि ... दर्जनों नाटक का लेखन, निर्देशन ... किया। 2012 में एनिमेशन ... एवं टेलीविजन, नोएडा से ... कोर्स पूरा किया।

इसके बाद दिल्ली के ... प्रोडक्शन हाउस में ... जनवरी 2015 को ... प्रोडक्शन कंपनी की स्थापना ... डॉक्यूमेंट्री फिल्म को राष्ट्रीय स्तर के ... फेस्टिवल 2016 में ... अवार्ड मिला।

दूसरी और बड़ी सफलता मिली ... सन ... इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल 2017 ... पर्यावरण भारती ... 27 डॉक्यूमेंट्री ... पर एक साथ ... भारती भाषा में भी ... है। बिहार राज्य की ... एक अहम ...

र यात्रा - यादगार लम्हें - प्रेरणा के साक्षी

नागरिक माननीय प्रणव मुखर्जी की गरिमामयी
र्ण विधार्थियों में 1370 को डीग्री, 37 को स्वर्ण
मारोह में तत्कालीन राज्यपाल माननीय अजीज
बरेन्द्र कोहली को मानद उपाधि प्रदान की गई।
हारा बचपन के मसीहा, शांति के लिए नोबल
थति में सम्पन्न होना है। आशा की जाती है कि
वसर साबित होगा।

स्वर्णिम पल

ं समर्थ-महान — द्वितीय दीक्षान्त समारोह

शा में सराहनीय प्रयास

डॉ. एपीजे कलाम,
भूतपूर्व राष्ट्रपति, भारत

जिससे वे अन्य लोगों में आशा का संचार कर सकें। देवसंस्कृति विवि का उद्देश्य संस्कृति को विकसित करना है, खासकर जब हम भारत को आने वाले दिनों में एक विकसित, खुशहाल देश के रुप में बदलने जा रहे हैं। मुझे विश्वास है कि विवि के विद्यार्थी भारत को 2020 तक विकसित देशों की श्रेणी में पहुँचाने के उद्देश्य में पूरी भागीदारी करेंगे, क्योंकि मुझे स्वर्ण पदक देते हुए आभास हुआ कि जिन विषयों पर यहाँ अनुसंधान हो रहे हैं, वे इस योजना के लिए बहुत प्रासंगिक हैं। अर्थव्यवस्था और ग्रामीण विकास के लिए महत्वपूर्ण आधार है। विज्ञान और अध्यात्म में समन्वय मुश्किल लगता है, ऐसा लोगों का मानना है। लेकिन मैंने देखा है कि किस प्रकार विज्ञान और अध्यात्म साथ मिलकर कार्य कर सकते हैं और देश के लिए महान उपलब्धि हासिल कर सकते हैं यह केवल भारत में ही संभव है। देसविवि का इस दिशा में प्रयास सराहनीय है।

ज्ञानपूर्ण विकसित भारत का निर्माण करें — संदेश

विज्ञान क्रांति के पथ पर तेज़ी से बढ़ चलें

हमारा सन्कल्प है कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय से उठ खड़े होने वाला युवा आंदोलन ज्ञानक्राति के पथ पर तेज़ी से बढ़ चले और ज्ञानपूर्ण विकसित भारत का निर्माण करें। हमारे अपने स्वप्न और संकल्प हमारे अपने स्वप्न और सन्कल्प न रहे, हमारे विश्वविद्यालय का प्रत्येक युवा इसे अपना स्वप्न और सन्कल्प बनाए और इसकी अग्नि-स्फुलिंग भारत के प्रत्येक शहर और गांव तक पहुँचे। हमारे ये स्वप्न सन्कल्प और सूत्र हमारे मार्गदर्शक परम पूज्य पण्डित श्री राम शर्मा आचार्य जी की देन है। उनके हृदय कि विकलता भरी तड़प का हमारे हृदय में संचार हुआ है।

डॉ. प्रणव पंड्या
कुलाधिपति, देसंविवि

अपने जीवन कि संध्या बेला में उन्होंने ज्ञान के प्रचार के लिए एक विश्वविद्यालय का स्वप्न देखा। देव संस्कृति विश्वविद्यालय उनके दिव्य स्वप्नों का विश्वविद्यालय है। अब हम सबका यह पावन कर्त्तव्य है कि हम मिल जुलकर इस स्वप्न संकल्प को मूर्त रूप दें और उनके सृजन संदेश का दिग-दिगन्त व्यापी उद्घोष एवं प्रसार करें।

दीक्षांत समारोह में आए सभी छात्र-छात्राओं को हमारी बहुत-बहुत बधाई, हम बिछुड़ने के लिए नहीं मिले थे, हमारा लगाव, जुड़ाव आपके साथ हमेशा रहेगा।

रणक्षेत्र के लिए आप हैं तैयार

र चलें जो विश्वविद्यालय से आपने सीखे

प्रणाली से बेहद प्रभावित हूँ। आपने इस विश्वविद्यालय से जो शिक्षा और विदया प्राप्त की है, जो आत्म विश्वास आपमें जगाया गया है, जिस व्यक्तित्व का विकास आपने इस पवित्र वातावरण में किया है, वे सब सर्वोतम उपकरण हैं, जिनसे आप सुसज्जित हैं, जो आपको हर कठिनाई से लड़ने का साहस देंगे। समस्त विश्व आपका है, भविष्य आपका है।

संदेश — विवि की प्रतिष्ठा को साथ लेकर आगे बढ़ो

हमारे रग-रग में जो भाव भरा है जिसको समाज देखना चाहता है

श्रद्धेया शैलबाला पंड्या
कुलसंरक्षिका, देसंविवि

आप सब हम सब के प्यारे प्यारे बालक हो। जब आप छोटे होते हो तब आपकी हर गलती माफ हो जाती है, माँ-बाप सोचते है कैसे आपकी हर इच्छा पूरी करें, लेकिन अब आप बड़े हो गए हो, अब आप पर दोहरी जिम्मेदीरी आ गई है, एक घर की ओर एक विश्वविद्यालय की। तुम्हें अब दोनों जिम्मेदारियाँ उठानी हैं।

यहाँ से ली सीख एवं ज्ञान के साथ तुम आगे बढ़ो। तुम्हारा मार्गदर्शन हम पीछे रहकर करेंगे। जीवन के रणक्षेत्र में ही असल परीक्षा होनी है। तुम विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को साथ लेकर आगे बढ़ो। अब तुम देसंविवि के प्रतिनीधि हो, देवसंस्कृति के दूत हो, सकारात्मक परिवर्तन के संवाहक हो।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि तुम यहाँ रहकर क्या बने, युगऋषि के नवसृजन के भाव को कितना आत्मसात किया। तुम लोगो को यह दिखा सको कि तुम विश्वविद्यालय में रहे तो हमारे रग-रग में जो भाव भरा है उसको समाज देखना चाहता है।

तुम जहां भी रहो इस मूल से जुडे रहना, हमारा मूल देशभक्ति का है, संस्कृति प्रेम का है। हमको नए युग के लिए नए वातावरण के लिए नए सैनिक चाहिए। हमारे बच्चे कामयाब होंगे और आगे बढ़ेंगे। भगवान करे कि तुम प्रगति करो और दिन-रात खूब काम करो।

्र की ओर बढ़ते कदम

चर्चा में है।

अंतर्राष्ट्रीय नाट्य प्रतियोगिता 2013 देहरादून में अर्थी सजा दो को सर्वश्रेष्ठ स्क्रिप्ट एवं सर्वश्रेष्ठ नाटक का अवॉर्ड मिला। राष्ट्रीय नाट्य प्रतियोगिता 2013 जयपुर में मेरा है बैल बिकने वाला हिंदी नाटक के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का अवॉर्ड मिला। पुनः अंतर्राष्ट्रीय नाट्य प्रतियोगिता 2015 देहरादून हिंदी नाटक अंजाम-ए-गुलिस्तां क्या होगा को सर्वश्रेष्ठ नाटक एवं सर्वश्रेष्ठ पटकथा का अवॉर्ड मिला और इसी नाटक को 2016 कोलकाता में सर्वश्रेष्ठ नाटक एवं शिमला में भी सर्वश्रेष्ठ नाटक एवं हमें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का अवॉर्ड मिला।

एक्टिंग में बेस्ट परफॉर्मेंस के लिए नोएडा में पुरस्कार मिला। नाटक के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए बिहार सरकार ने गणतंत्र दिवस 2016 को दाउदनगर रत्न से सम्मानित किया एवं दाउदनगर डॉट इन न्यूज वेब पोर्टल ने कला शिखर सम्मान से सम्मानित किया। धर्मवीर प्रोडक्शन हाउस में करीब दो दर्जन युवा फिल्म मेकिंग विधा सीख रहे हैं। कई यूनिवर्सिटी के छात्र इंटर्नशिप पर इनकी कंपनी में आते रहते हैं। - धर्मवीर भारती, पीजी डिप्लोमा, पत्रकारिता एवं जनसंचार, 2008-09

काशी में योग आरोग्य केन्द्र की अलख

2010-11 सत्र में देव संस्कृति विश्व विद्यालय से योग व् वैकल्पिक चिकित्सा में स्नातकोतर डिप्लोमा किया हूँ। इसके पूर्व की शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई। वहां से अध्ययन के बाद मैं आपने कैरियर को लेकर अत्यधिक तनाव में था, फिर मुझे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के बारे में पता चला, इन्टरनेट पर प्रथम दृष्टि में ही ऐसे विश्विद्यालय को देख कर यहां अध्ययन करने की रूचि हुई, यहाँ के दिव्य वातावरण में आते ही मेरा तनाव कम हो गया।

यहां चल रहे स्वाध्याय मंडल से जुड़ा, जिससे मुझे यहाँ की दिनचर्या में ढलने में बहुत सहायता मिली।

यहाँ की दिनचर्या एवं गतिविधियाँ ही योग विषय की सार है अध्ययन के बाद मैं कई संस्थानों में विभिन्न पदों पर कार्य किया, लेकिन मुझे संतुष्टि नहीं मिली, जिसके कारण जॉब भी छोडनी पडी। मेरा तनाव बढता ही जा रहा था। एक रात सोते समय मुझे विश्वविद्यालय में चल रहे कुलाधिपती जी की गीता क्लास की याद आयी जिसमे उन्होंने कहा था कि we are not job seeker we are job creator, यह व्याख्यान दिमाग में आते ही मेरे अन्दर प्राण का संचार हुआ, तनाव में भी कमी आयी और मैं छत्तीसगढ में कार्यरत एक जॉब को छोडकर मार्च 2013 में वाराणसी आ गया। यहाँ आकर अपने मित्र से उनके घर में एक कमरा किराए पर लिया। मासिक खर्च के लिये ट्यूशन पढाने लगा तथा ट्यूशन के पैसे से प्राकृतिक चिकित्सा व् योग के लिए न्यूनतम संसाधन जुटाये, अपने मित्र से मैंने कुछ मरीज भेजने को कहा। गुरु एवं गायत्री मंत्र के आशीर्वाद से सारे मरीज आश्चर्यजनक रुप से लाभान्वित होने लगे।

आज वाराणसी में योग आरोग्य केन्द्र के नाम से एक मात्र सभी सुविधाओं से युक्त प्राकृतिक चिकित्सालय है जहाँ प्राकृतिक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर, प्राणिक हीलिंग आदि अनेक वैकल्पिक चिकित्सा की सुविधाएं है। अब इसकी कई शाखाएं खोलने की तैयारी चल रही है। इसके माध्यम से कई लोगों को रोजगार मिल रहा है। मैं कोटि कोटि आभारी हूँ विश्वविद्यालय का, गीता क्लास का एवं समस्त गुरुजनों का।

- डॉ राजेश रंजन, मुख्य प्रबंधक एवं मुख्य प्राकृतिक चिकित्सक, योग आरोग्य केन्द्र, वाराणसी, उ०प्र०

कृषि एवं विकास संचार की डगर पर

देसंविवि से एमए पत्रकारिता करने के बाद मुझे 2008 में छतीसगढ़ में हरिभूमि समाचार पत्र में उप सम्पादक का कार्य मिला, जहाँ मुझे पत्रकारिता के आधारभूत तत्वों को समझने के साथ नक्सलवाद को नजदीक से देखने का मौका मिला। इसी दौरान भारतीय कृषि क्राति के जनक कहे जाने वाले डॉ. एम.एस.स्वामीनाथन जी ने मशवरा दिया, 'यदि पडित जी (पं. श्रीराम शर्मा आचार्य) को अपना आदर्श मानते हो तो धरती के पहले इंसान यानि किसान के साथ मिलकर काम करो और गांवों की सेवा करो।' गांव, किसानों एवं कृषि क्षेत्र में काम करने का मन बन चुका था। इसी बीच मुझे एग्रीकल्चर टुडे में सह संपादक के रूप में कार्य मिला। कई वर्ष तक इस पत्रिका में कार्य करने के बाद जी.बी. पंत कृषि एंव प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर में किसान भारती और इंडियन फार्मर डाइजेस्ट के लिए संपादन का अवसर मिला। इसके साथ अपनी खेती किसानी से जुड़े विकासात्मक मुद्दों पर समझ और पुख्ता होती चली। इतने ही वर्षों तक विश्वविद्यालय की सामुदायिक रेडियो सेवा के माध्यम से भी किसान और ग्रामीणों के बीच संपर्क बढ़ा। इस सामुदायिक रेडियो के कार्यक्रम समन्वयक के रुप मे संचार के रेडियो माध्यम से कृषि पत्रकारिता एवं विकासात्मक संचार की नई समझ विकसित हुई। विगत डेढ़ वर्षें से डॉ. वंदना शिवा द्वारा संचालित 'नवधान्य' नामक ट्रस्ट देहरादून-दिल्ली के लिए मीडिया समन्वयक तथा कृषि एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत भर में किए जा रहे जागरूकता एवं खेती कार्यों के लिए अभियान निर्माण की गतिविधियों मे संलग्न हूँ। इसके माध्यम से खेती के परम्परागत तरीकों, इनकी बदहाल स्थिति, इनकी संभावनाओ और आर्गेनिक खेती को नजदीक से देखने-समझने का अवसर मिला।

- दिनेश चंन्द्र सेमवाल,
2006-08, एमए-
पत्रकारिता छात्र देसंविवि

प्रस्तुति :-पत्रकारिता एवं जनसंचार केन्द्र, देसंविवि, हरिद्वार

लात्विया में प्रथम भारतीय संस्कृति एवं अध्ययन केन्द्र का शुभारंभ

देसंविवि की विभिन्न गतिविधियाँ बाल्टिक सेंटर की तरह संचालित होंगी

लात्विया में देसंविवि की तर्ज पर खुले केन्द्र के उद्घाटन कार्यक्रम में चर्चा करते प्रतिनिधि

ईशा

ऋषि परंपरा पर आधारित देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज नित नये आयाम गढ़ रहा है। भारतीय संस्कृति को विश्वभर में फैलाने के लिए संकल्पित देसंविवि अपने पाठ्यक्रमों के साथ विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के विकास हेतु जो कदम उठाया है, उससे देश-विदेश के अनेक शैक्षणिक संस्थान प्रभावित हुए हैं और वे अपने महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में लागू करना प्रारंभ कर दिये हैं।

इसी क्रम में लात्विया के बेजनीक्स शहर में सेन्टर ऑफ इंडियन स्टडीज़ एण्ड कल्चर के केन्द्र का शुभारंभ हुआ।

स्वीडन और लात्विया में भारतीय राजदूत एच.ई. मोनिक मेहता की उपस्थिति में देव संस्कृति के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने विडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से केन्द्र का संयुक्त रूप से उद्घाटन किया। देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने बताया कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य परंपरागत शिक्षा का अध्यात्म व विज्ञान के साथ समन्वय करना है, जिससे नैष्ठिक, समर्पित विद्यार्थियों का निर्माण हो, जिनकी जीवनशैली में वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का समावेश हो तथा वे राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत आदर्श नागरिक बनकर समाज व राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे सकें। उन्होंने बताया कि देसंविवि का भारत के अलावा जर्मनी, अर्जेंटिना, रसिया, चीन, इण्डोनेशिया, इटली, अमेरिका आदि देशों के साथ अब तक 30 से अधिक शैक्षणिक अनुबंध (एमओयू) हो चुके हैं। उल्लेखनीय है कि बाल्टिक देशों के राजदूतों की मौजूदगी में जुलाई 2016 में देवसंस्कृति विवि में बाल्टिक सेंटर का शुभारंभ हुआ, तब से लेकर अब तक यह सेंटर कई उपलब्धियाँ हासिल की हैं। लात्विया का यह केन्द्र देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में स्थापित बाल्टिक सेंटर के सहयोगी संस्था के रूप में कार्य करेगा।

देसंविवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने बताया कि केन्द्र में भारतीय संस्कृति, योग एवं भारतीय शास्त्रीय संगीत तथा नृत्य के पाठ्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि भारत व यूरोपियन देशों के बीच सक्रिय सहयोग की भावना विकसित हो रही है। बताया कि यह केन्द्र सांस्कृतिक क्रियाकलापों एवं वैज्ञानिक शोध के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

यह केन्द्र बाल्टिक देश-लात्विया, एस्टोनिया, लिथुआनिया आदि देशों में देव संस्कृति एवं शिक्षा के प्रचार-प्रसार के प्रमुख केन्द्र के रूप में कार्य करेगा। उद्घाटन अवसर पर प्रो. वालडिस मुक्तुपेवेलस, आइजा द्रिशंका, उन लार्सिआ पदोस्कोचया सहित अनेक शिक्षाविद, गणमान्य नागरिक एवं बाल्टिक देशों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

इंडोनेशियाई कलाकारों ने किया वाल्मीकि रामायण का मंचन

देसंविवि में रामायण का मंचन करते इंडोनेशियाई कलाकार

प्रतिभा, रचना

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में बाली (इंडोनेशिया) से आए अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक कलाकारों ने बाल्मीकि रामायण का संगीतमय एवं मार्मिक प्रस्तुतिकरण किया। कार्यक्रम का शुभारंभ शांतिकुंज की अधिष्ठात्री शैलजीजी ने दीप प्रज्जवलन कर किया। गुरुकुल में शिक्षा-दीक्षा से लेकर विभिन्न घटनाक्रमों की मार्मिक प्रस्तुतियों ने समां बाँध दिया, तो वहीं राम, सीता व लक्ष्मण के वनवास के दौरान हनुमान की भक्ति एवं दायित्व का निर्वहन की प्रस्तुति ने सभी को रोमांचित कर दिया। वहीं अपने दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन की अपील की। इस अवसर पर इंडोनेशिया कलाकारों के वरिष्ठ सदस्य श्री धर्मयश ने कहा कि वाल्मीकि रामायण का यह प्रस्तुतिकरण संगीत की मधुर लहरियों के साथ रोचक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है। इस मंचन में कलाकारों के नृत्य के चरणों, भाव भंगिमा, विभिन्न मुद्राओं का विशेष महत्व है।

समापन से पूर्व संस्था की अधिष्ठात्री शैल जीजी ने सभी कलाकारों को मंत्र चादर एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। वहीं श्री धर्मयश ने इंडोनेशियाई काष्ठ कलाकृति विवि परिवार को भेंट किया। इस अवसर पर इंडोनेशिया राष्ट्रपति के सलाहकार कुटट नास्तव, राष्ट्रीय चित्रकार इंडा उदायन, पर्यटन एलाइंस ऑफ बाली के चेयरमेन मंकु पुनिका सहित विश्वविद्यालय के कुलपति श्री शरद पारधी, कुलसचिव श्री संदीप कुमार व विवि परिवार उपस्थित थे।

कर्तव्य निभाने का पर्व है गणतंत्र दिवसः डॉ. पण्ड्या

आलोक, शुभम

शांतिकुंज, देसंविवि एवं गायत्री विद्यापीठ में 68वाँ गणतंत्र दिवस उल्लासपूर्वक मनाया गया। शांतिकुंज परिसर में गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं शैलजीजी ने तिरंगे का पूजन किया तो वहीं देसंविवि में कुलाधिपति डॉ. पण्ड्या ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

इस अवसर पर अपने संदेश में कुलाधिपति ने भारतीयता को विकसित करने एवं अपने कर्तव्यों का पालन के लिए उपस्थित जनसमुदाय को शपथ दिलाई। कुलाधिपति ने विवि द्वारा प्रकाशित ई-न्यूज पेपर 'रिनेन्सॉं' का विमोचन कर युवाओं को इसमें भागीदारी करने पर बल दिया। संस्था की अधिष्ठात्री शैल जीजी ने भारत की वर्तमान स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए युवाओं को आगे बढ़कर ईमानदारी के साथ राष्ट्रोत्थान के कार्यों में जुटने का आवाहन किया।

इससे पूर्व गायत्री विद्यापीठ के नन्हीं-नन्हीं बच्चियों ने भारत हमको जान से प्यारा है गीत पर मनमोहक नृत्य किया, तो वहीं 'रघुपति राघव राजाराम' पर सामूहिक गायन के माध्यम से महात्मा गांधी एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को याद कर उनके बलिदान को नमन किया। देसंविवि के विद्यार्थियों ने सेना के वीर जवानों पर आधारित नृत्य नाटिका से देशभक्ति को प्रत्येक जन के मन में पिरोने का कार्य किया। इस अवसर पर शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्ता, देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी, प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या, कुलसचिव श्री संदीप कुमार उपस्थित रहे।

गणतंत्र दिवस के मौके पर प्रस्तुति देते विवि के छात्र

मुख्य गणतंत्र परेड का हिस्सा बने विश्वविद्यालय के तीन छात्र

मुख्य गणतंत्र परेड में हिस्सा लेते विवि छात्र

निकिता, नेहा

गौरव केवल विवि तक ही सीमित नहीं रहा, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के तीन छात्र मुख्य गणतंत्र परेड का हिस्सा बने। दिल्ली में गणतंत्र दिवस पर होने वाले मुख्य परेड में देव संस्कृति विश्वविद्यालय की कु. प्राची अग्रवाल, मनोज कुमार एवं गौतम कुमार 26 जनवरी को मुख्य परेड का हिस्सा बनें। छात्रों के अनुसार परेड की तैयारी करते समय नियमित रूप से 6 से 7 घंटे परेड करने के साथ ही शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सभी राज्यों के विद्यार्थियों को अपने-अपने राज्यों की विशेष गतिविधियों को सांस्कृतिक नृत्यों, नाटकों इत्यादि के माध्यम से दिखाना पड़ता था।

डॉ. पण्डया के अनुसार देव संस्कृति विश्वविद्यालय से लगातार चौथी बार परेड में भाग लिया, यह देव संस्कृति विश्वविद्यालय के साथ-साथ उत्तराखण्ड के लिए भी गौरव का विषय है। कु. प्राची के प्रधानमंत्री कार्यालय में सांस्कृतिक संध्या में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर पूरी टीम को विशेष बधाई दी गयी एवं पुरस्कृत किया गया।

दे.सं.वि.वि. के रा.से.यो. के समन्वयक डॉ. अरूणेश पाराशर ने रा.से.यो. परिवार की ओर से शुभकामनाएें दीं। उनके अनुसार परेड में प्रतिभाग लेकर छात्रों ने 29 जनवरी को परेड रिट्रीट में हिस्सा लिया। तीनों छात्र-छात्राओं के आगमन पर पूरे विश्वविद्यालय परिवार की ओर से इन सभी का स्वागत किया गया।

गांधी फेलोशिप कार्यशाला में सीखे प्रबंधन के गुर

गांधी फेलोशिप कार्यशाला में उपस्थित विवि के छात्र

देसंविवि द्वारा गांधी फेलोशिप कार्यशाला का आयोजन प्रार्थना सभागार में किया गया । जिसमें विवि के विभिन्न विषयों के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। इस कार्यशाला में छात्र-छात्राओं को प्रबंधन के गुणों की शिक्षा दी गयी। कार्यशाला के माध्यम से समय का सदुपयोग, काम की प्राथमिकता इत्यादि पर प्रकाश डाला गया। गांधी फेलोशिप के श्री मनीष जी ने गांधी फेलोशिप के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए कहा कि जो लोग देश के लिए या समाज के लिए कुछ करना चाहते हैं गांधी फेलोशिप उनके लिए एक उपयुक्त स्थान है। यहाँ लोग अलग-अलग स्तर पर काम करते हैं। इसका चुनाव व्यक्ति के निजी रूझान के आधार पर किया जाता हैं। गांधी फेलोशिप में विद्यार्थी को अपनी नेतृत्व की क्षमताओं का विकास, समाज की सेवा, आत्मविश्वास का विकास, एक दूसरे से नई चीजें सीखने के अवसर और अनेक गुणों को अपने अंदर धारण करने की योग्यता भी विकसित करता है। इसके बाद कार्यकर्ता श्री अग्नि जी ने मंच पर अपने विचार साझा किए। श्री अग्नि द्वारा करायी गई गतिविधियों को शिक्षकों से लेकर छात्र-छात्राओं तक सभी ने सराहा एवं अंत में सभी प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा किये।

गायत्री परिवार ने युवा चेतना दिवस के रूप में मनाया विवेकानंद की जयंती को

चरित्र बल के धनी थे स्वामी विवेकानंदः डॉ प्रणव पण्ड्या

औली, नेहा

राष्ट्रीय युवा दिवस 12 जनवरी को शांतिकुंज व देसंविवि परिवार ने युवा चेतना दिवस के रूप में मनाया। इस अवसर पर गायत्री परिवार के मुख्यालय के नेतृत्व में देशभर के 400 जिलों में तीन हजार से अधिक स्थानों पर मशाल यात्रा निकाली गयी। वहीं देसंविवि के मृत्युंजय सभागार में आयोजित युवा चेतना दिवस समारोह के अवसर पर उपस्थित सैकड़ों युवाओं ने स्वामी विवेकानंद जी के आदर्शों को अपनाने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी ने परिवर्तन की आधार शिला रखी। हमें उन्हीं की तरह गुरूनिष्ठा व देशभक्ति का परिचय देते हुए युगनिर्माण करना होगा, हमें अपने आपको पहचानना होगा। स्वामी जी का चरित्र, उनकी पारदर्शिता व उनकी अपारकरूणा उनकी सच्ची शक्ति थी। वे जो कहते थे, उसे जीवन में समर्पण के साथ के साथ अपनाते भी थे। यही कारण था कि वो बड़े से बड़ा कार्य सम्पन्न कर पाये। देसंविवि के कुलाधिपति डॉ. पण्ड्या ने कहा कि स्वामी जी के विचारों को आत्मसात करने से स्वयं भी ऊँचा उठेंगे और दूसरों का भी मार्ग प्रशस्त कर पायेंगे। आज ऐसे प्रतिभावान व कर्मठ युवाओं की जरूरत है, जो निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र के विकास के लिए कार्य कर सकें।

गायत्री परिवार प्रमुख डॉ. पण्ड्या ने कहा कि युवा क्रांति वर्ष 2017 में चार वीडियो रथ निकाले जायेंगे, जो पूरे देश में परिव्रज्या करेंगे। साथ ही इसके माध्यम से युवाओं के लिए विविध कार्यक्रमों का संचालन होगा। यह चारों रथ जनवरी 2018 में नागपुर (महाराष्ट्र) में एकत्रित होंगे, जहाँ विराट युवा सम्मेलन का आयोजन निर्धारित है। कुलपति श्री शरद पारधी ने कहा कि स्वामी जी धर्म, शिक्षा एवं दर्शनशास्त्र के प्रतिमूर्ति थे। प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का जीवन मनुष्य में देवत्व के उदय का उद्घोष है। आज का प्रत्येक युवा उन्नति-पतन के बीच खड़ा है। चयन उसे करना है कि अपने विवेक को जाग्रत कर ठाकुर रामकृष्ण परमहंस जैसी महान सता के प्रति समर्पित होकर जिये या चकाचौंध वाली जिन्दगी के आकर्षण में फंसकर या मनुष्य के जीवन जैसे सौभाग्य को व्यर्थ में गँवाकर जाये। युवावस्था जीवन को सुधारने का सुनहरा अवसर है। उन्होंने कहा कि लोगों में प्रेम, सहकार, सेवा व सहयोग का बीज बोते हुए स्वयं बनने और बनाने का नाम है युवा। युवाओं को खिलाड़ियों की भाँति हार-जीत से दूर रहते हुए अपने आदर्शों के साथ जीवन जीना चाहिए। उन्होंने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से युवाओं को तनाव से दूर रहते हुए विकसित हो रहे राष्ट्र में सहभागिता करने का आवाहन किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या ने दीप प्रज्जवलन व स्वामी जी के चित्रों पर माल्यार्पण कर किया। तत्पश्चात् डॉ. शिवनारायण प्रसाद एवं टीम ने स्वामी जी के प्रिय भजन 'चलो मन जायें घर अपने...' को अत्यन्त भावभरे सूरों में प्रस्तुत कर उपस्थित जनों के हृदय को रोमांचित कर दिया। इस अवसर पर युवाओं ने युग निर्माण सत्संकल्प का पाठकर सत्कर्म व सद्भावना को विकसित करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का संचालन युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री के. पी. दूबे ने किया।

सृजनशील युवा सम्मेलन पर उपस्थित विवि के कुलाधिपति व प्रस्तुति देते विवि के सदस्य

देसंविवि में योग पर त्रिदिवसीय कार्यशाला का हुआ आयोजन

कुशल योग प्रशिक्षक तैयार करना हमारा लक्ष्य: श्री शरद पारधी

योग प्रशिक्षण कार्यशाला में उपस्थित प्रतिनिधि व विवि के सदस्य

❒ चित्रिप्रकाशी

योग पर एक दिवसीय विशिष्ट कार्यशाला का आयोजन देसंविवि में 28 फरवरी को आयोजित किया गया। इस भारत के महत्वपूर्ण शैक्षणिक केन्द्रों से आए लगभग 34 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में प्रतिभाग किया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य परीक्षकों के गुणवत्ता को विकसित करना तथा उन्हें प्रोफेशनल प्रमाण पत्र संबंधी जानकारी प्रदान करना रहा।

कार्यशाला का उद्घाटन भारतीय योग ऐसोसिएशन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. एस. पी. मिश्रा ने किया। उन्होंने बताया कि आज पूरा भारत की ओर देख रहा है। विश्व किसी को योग की आवश्यकता है। इस कार्यशाला के माध्यम से हम कुशल व अनुभवी योग प्रशिक्षक तैयार करना चाहते हैं। क्वालिटी कन्ट्रोल ऑफ इंडिया के कार्यकारी अधिकारी डॉ. टी.पी. आहलूवालिया ने क्यू.सी.आई. की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सभी योग परीक्षकों के लिए क्यू.सी.आई. की परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य है तभी वह देश व विदेश में योग प्रशिक्षक या योग शिक्षक के रूप में कार्य कर सकते हैं। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से पधारे प्रोफेसर ईश्वर भारद्वाज ने सभी योग प्रशिक्षकों का मार्गदर्शन किया। इस कार्यशाला की रूपरेखा व पाठ्यक्रम पर पतंजलि विवि से आए डॉ. एन.के. यादव ने विस्तृत रूप से प्रकाश डाला।

इंटरनैशनल योगा चैम्पियनशिप में झटके गोल्ड और सिल्वर मैडल

❒ वैकल्पिक चिकित्सा के साथ योगाभ्यास करने से अस्वस्थ व्यक्ति को लाभ जल्दी मिलता है: डॉ. चिन्मय पण्ड्या

❒ ऋषभ, रवि

23वें इंटरनेशनल योगा चैम्पियनशिप, पाण्डिचेरी में सम्पन्न हुये योग प्रदर्शन कार्यक्रम में देसंविवि का सराहनीय प्रदर्शन रहा। 4 से 7 जनवरी के बीच देसंविवि का दल योग कार्यक्रम में प्रतिभागित करने गया था। योग सम्बन्धी जागरूकता एवं योग के प्रचार प्रसार हेतु हर साल पाण्डिचेरी की सरकार और पर्यटन विभाग मिलकर इस कार्यक्रम को सम्पन्न कराता है। देसंविवि से आए कोच सुनील कुमार यादव के अनुसार सभी छात्र-छात्राओं का प्रदर्शन बेहद सफल हुआ और सराहनीय रहा। उनके अनुसार 21 से 25 आयु वर्ग में दिलराज प्रीत कौर और सौरभ रतूड़ी ने गोल्ड मैडल प्राप्त किया। इसी क्रम में 26 से 35 आयु वर्ग में सचिन जायसवाल ने गोल्ड मैडल प्राप्त किया। 21 से 25 आयु वर्ग में ही नवीकांत जायसवाल और सुरेन्द्र ने सिल्वर मैडल प्राप्त किया। 21 से 25 आयु वर्ग में ही कुलदीप जोशीला और राजेश कुमार चौधरी ने सिल्वर मैडल प्राप्त किया। इसी क्रम में कु. अनुला 21 से 25 आयु वर्ग और सुनील वर्मा 26 से 35 आयु वर्ग में चौथे स्थान पर रहे। दल के देव संस्कृति विश्वविद्यालय लौटने पर कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या द्वारा सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी गयी। डॉ. पण्ड्या से अपने अनुभवों को साझा करते हुए विद्यार्थियों ने आहार प्रबंधन को अपने शरीर के संतुलन हेतु प्रमुख कारक माना। डॉ. पण्ड्या द्वारा उन्हें इससे सम्बन्धित 'गीता' के सूत्र द्वारा जीवन में इसकी उपयोगिता एवं महत्व को समझाया गया। प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या के अनुसार विश्वविद्यालय के छात्र-छात्रायें योग प्रदर्शन ही नहीं योग के सूत्रों को भी अपनाते हैं जिससे शरीर के साथ-साथ मानसिक प्रबंधन भी हो जाता है। विश्वविद्यालय लौटने पर पूरे दल को योग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सुरेशलाल बर्णवाल एवं सभी शिक्षकों द्वारा बधाई दी गयी।

इन्टरनेशनल योगा चैम्पियनशिप के दौरान मैडल के साथ विवि के विद्यार्थी एवं शिक्षक

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर हुए विभिन्न कार्यक्रम

देसंविवि में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर कई रचनात्मक कार्यक्रमों के आयोजन किये गये। इन कार्यक्रम का आयोजन 28 फरवरी को कम्प्यूटर विभाग व यूनार्क के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम को दो मुख्य चरणों में विभाजित किया गया। पूर्व चरण में वैज्ञानिक पोस्टर, निबंध प्रतियोगिता इत्यादि का आयोजन किया गया व दूसरे चरण में वैज्ञानिक नाटक तथा वैज्ञानिक प्रस्तुतिकरण इत्यादि कार्यक्रम किये गये। पोस्टर प्रतियोगिता, निबंध, कविता, वैज्ञानिक लेखन, नाटक प्रतियोगिता, प्रस्तुतिकरण में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का सम्बोधन करते हुए प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि आज जीवन के सभी पक्षों को वैज्ञानिक ढंग से देखने की आवश्यकता है जिसके द्वारा बखूबी ढंग से परम्पराओं व समाज के विभिन्न पहलुओं को समझाया जा सकता है। आज की परिस्थितियों में विज्ञान और आध्यात्म को एक दूसरे से सामंजस्य बिठाते हुए डिजिटल क्रांति के साथ-साथ लोगों की भावात्मक शक्ति को भी समझना होगा। कम्प्यूटर विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अभय सक्सैना के अनुसार आज जीवन के हर क्षेत्र में वैज्ञानिक दृष्टि का प्रयोग हो रहा है आवश्यकता इस बात की है कि इसका प्रयोग उचित अर्थों में किया जाए। मंच संचालन राजेश्वरी त्रिवेदी द्वारा किया गया।

समन्वयकों द्वारा दिया गया रिर्सोस पर्सन के रूप में व्याख्यान

❒ रोशनी, विपुल

देसंविवि के पर्यटन विभाग द्वारा ग्राफिक एरा विषय पर विवि में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में प्रतिभागिता की गयी। सेमिनार में जहाँ विभाग के समन्वयकों ने रिर्सोस पर्सन के रूप में अपनी भूमिका निभाई तो वहीं एम.बी.ए. के छात्र-छात्राओं ने प्रस्तुतीकरण में अपनी सराहनीय भूमिका अदा की। सेमिनार में विषय प्रस्तुतीकरण में पर्यटन में महिलाओं की भूमिका के साथ-साथ टिकाऊपन, जिम्मेदारी पूर्ण पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन एवं स्वास्थ्य व मेडिकल पर्यटन पर पेपर प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम के प्रथम चरण में पर्यटन विभाग के मुख्य समन्वयक डॉ. अरूणेश पाराशर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन व्यापार की संभावनाओं में महिलाओं का स्थान नामक विषय पर सभा को सम्बोधित किया गया तो वहीं समन्वयक डॉ. उमाकांत इंदौलिया ने पर्यटन क्षेत्र में महिलाओं की संभावनाएं विषय पर सेशन चेयर किया। पर्यटन के क्षेत्र में देसंविवि द्वारा कुल 10 पेपर प्रस्तुत किए गए जिनमें जिम्मेदारी पूर्ण पर्यटन में विभा नेगी, और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन में महिलाओं की हिस्सेदारी में शैलेन्द्र रावत का प्रस्तुतिकरण सराहनीय रहा। कार्यक्रम में विभाग के श्री प्रसून कुमार, श्री अजय भारद्वाज, श्री प्रखर सिंह पाल, श्री पंकज सिंह आदि शिक्षकों ने भी प्रतिभागिता की।

देसंविवि में आयोजित हुई 16वीं प्रांतीय योग प्रतियोगिता

विवि में 16वीं प्रांतीय योग प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें हरिद्वार, देहरादून सहित कई जिलों के प्रतिनिधियों ने योग, आसन के विभिन्न कलाओं का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता का उद्घाटन देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या, योग फेडरेशन के अध्यक्ष डॉ. ईश्वर भारद्वाज, पतंजलि विवि के प्रो. जी.डी. शर्मा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि योग फेडरेशन के अध्यक्ष डॉ. भारद्वाज ने कहा कि योग के माध्यम से व्यक्ति जीवन में अनुशासन का पालन करना सीखता है। डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि चित्त की वृत्तियों को साध लेना ही योग है। वर्तमान समय में युवाओं को अपने समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए योगाभ्यास करना चाहिये, जिससे उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास सम्यक रूप से हो सके।

प्रतियोगिता में देसंविवि, गुरुकुल कांगड़ी विवि, उत्तराखण्ड संस्कृति विवि, पतंजलि विवि, आचार्यकुलम, देहरादून व ऋषिकेश के कई शैक्षणिक संस्थानों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें 8 से 50 आयु वर्ग के विभिन्न ग्रुप में योग की कला, आसन, मुद्राओं का प्रदर्शन किया गया। इसमें महिला वर्ग में भूमिका जोशी, अनुष्का गुप्ता, अमृता, प्रिया राघव, आरती वर्मा ने तथा पुरुष वर्ग के रोहित यादव, राघव, सुरेन्द्र पटेल, लोकेश कुमार, सूर्यनाथ यादव ने अपने-अपने ग्रुप में प्रथम स्थान प्राप्त किया। तो वहीं महिला वर्ग में सौम्या, एस.संतोषिनी, शोभा सिंह, ममता, कौशल्या गैरोला ने तथा पुरुष वर्ग में अभ्युदय, दिव्यांशु, नवीन, नरेशचन्द, विनोद श्रीवास्तव को द्वितीय स्थान से संतोष करना पड़ा। इन विजयी प्रतिभागियों को अतिथियों ने प्रमाण पत्र, स्मृति चिह्न आदि से सम्मानित किया।

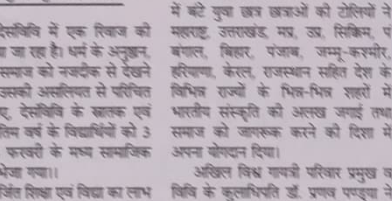

देसंविवि में योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा शिविर सम्पन्न

❒ संतोष

देसंविवि,दिसम्बर। शांतिकुंज के सेंटर फॉर कम्प्लीमेंटरी एण्ड अल्टरनेटिव मेडिसीन के नेतृत्व में योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा शिविर सम्पन्न हुआ।

प्रथम सत्र के अवसर पर प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि योग के वास्तविक स्वरूप तथा उसकी उपयोगिता को सर्वसुलभ बनाने के लिए युवाओं को आगे आना चाहिए। उन्होंने कहा कि वैकल्पिक चिकित्सा के साथ योगाभ्यास करने से अस्वस्थ व्यक्ति को लाभ जल्दी मिलता है और उन्हें निरोग बनाये रखने में सहायक होता है। शिविर के माध्यम से जन हिताय की भावना को प्रसारित करने का यह सुन्दर प्रयास है।

शिविर समन्वयक डॉ.अमृतलाल गुर्वेन्द्र ने कहा कि यह शिविर मधुमेह, अपच, कब्ज, एसीडिटी से संबंधित रोगों के लिए निर्धारित है। इसका उद्देश्य रोगों के बारे में जागरूक करना एवं उसका निदान करना है।शिविर के दौरान प्रतिभागियों की यज्ञ, योग, प्राकृतिक, प्राणिक हीलिंग, एक्यूप्रेशर पद्धति से चिकित्सा की जायेगी। वहीं मानसिक तनाव को दूर करने हेतु ध्यान आदि का नियमित कक्षाएँ भी चलेंगी। उन्होंने कहा कि शिविरार्थियों के लिए अलग से बौद्धिक कक्षा चलाई जायेगी। योग विभागाध्यक्ष ने कहा कि शिविरार्थियों के चिकित्सकीय परीक्षण करने के पश्चात् प्रतिभागियों को योगासन, ध्यान का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

छात्र-छात्राओं ने निःशुल्क योग शिविर, नशामुक्ति अभियान, युवा जागृति अभियान से सामाजिक जागरूकता की जगाई अलख

देसंविवि के 360 छात्रों ने देश के भर में एक माह तक चलाया जन-जागरूकता अभियान

❒ तनुषा, शुभांगी, साक्षी

परिव्रज्या देसंविवि में एक रिवाज की तरह से निभाया जा रहा है। धर्म के अनुष्ठान, प्रचार-प्रसार, समाज को नजदीक से देखने व मानव को उसकी असलियत से परिचित कराने के लिए, देसंविवि के स्नातक एवं स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों को 3 जनवरी से 3 फरवरी के मध्य सामाजिक परिव्रज्या पर भेजा गया।।

विवि में अर्जित शिक्षा एवं विद्या का लाभ समाज में बाँटने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष सैकड़ों की संख्या में विद्यार्थी देश भर के कोने-कोने व विदेशों में भी प्रव्रिज्या पर जाते रहे हैं। विश्वविद्यालय के बीए, बीएससी, बीसीए, एमए, एमएससी, बीएड के अंतिम वर्ष तथा डिप्लोमा, सर्टीफिकेट कोर्स के कुल 360 छात्र-छात्राओं ने एक महीने तक देश के भिन्न भिन्न भागों में रहकर निःशुल्क योग शिविर, शैक्षणिक संस्थानों में प्रतिभा परिष्कार कार्यशाला, वृक्षारोपण, नशामुक्ति अभियान, युवा जागृति अभियान, सहित युवाओं और समाज के अन्य वर्गों को प्रोत्साहित करने वाले विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों का संचालन किया। 118 टोलियों में बंटे युवा छात्र छात्राओं की टोलियों ने महाराष्ट्र, उत्तराखंड, मप्र, उप्र, सिक्किम, पं बंगाल, बिहार, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, केरल, राजस्थान सहित देश के विभिन्न राज्यों के भिन्न-भिन्न शहरों में भारतीय संस्कृति की अलख जगाई तथा समाज को जागरूक करने की दिशा में अपना योगदान दिया।

अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख व विवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या ने परिव्रज्या पर जाने वाले छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि इंटर्नशिप संभावनाओं को अवसर में बदलने का सुनहरा समय है। इस समय हमारे अंदर व्याप्त शक्तियों का हमें अहसास होता है। हमें अपनी मजबूती व कमजोरी को जानने व उसे दूर करने का अवसर मिलता है।

आदर्श परिव्राजक के रूप में स्वामी विवेकानंद को याद करते हुए उन्होंने कहा जब कोई सद्गुरु का संदेशवाहक बनकर निकलता है, तो उसकी शक्तियाँ सौ गुनी हो जाती है। उसका विचार, चरित्र और व्यवहार समाज को प्रभावित करता है। उन्होंने कहा कि अच्छे परिव्राजक को प्रतिकूलताओं के बीच अपना आत्मविश्वास नहीं खोना चाहिए। समय व कार्य की प्रतिबद्धता ही मनुष्य को ऊँचा उठाता है। प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि युवावर्ग की समस्याओं को युवा ही बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। समझदार, सुलझे हुए युवा ही सर्वश्रेष्ठ समाधान सुझा सकते हैं। परिव्रज्या से लौटकर आये विद्यार्थियों ने बताया कि यह एक अवसर होता है जहां हम वास्तव में जीवन जीने की कला से अवगत होते हैं। यह हमें जीवन में आने वाली उन कठिनाइयों से रूबरू कराती है, जिनसे कि हमारा सामना बहुत बाद में होता है।

इन्टर्नशिप के दौरान अपने विचारों को प्रस्तुत करते विवि के विद्यार्थी

युवावर्ग के विकास के लिए विभिन्न पहलुओं पर हुए विचार-विमर्श

नेपाल के युवाओं का विशेष प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

नेपाल से आये शिविरार्थियों को संबोधित करते श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या

ऋषभ

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में नेपाल प्रांत से आये करीब 500 युवाओं का पाँच दिवसीय भविष्य निर्माता प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इस शिविर में कुल 24 सत्र हुए, जिसमें युवाओं के विकास, पर्यावरण संरक्षण, नेपाल की गंगा मानी जाने वाली बाग्मती नदी व सरोवरो की स्वच्छता, स्वावलंबन, कुरीति उन्मूलन एवं सत्प्रवृत्ति संवर्धन आदि पहलुओं पर चर्चा हुई।

विदाई से पूर्व प्रतिभागियों के भेंट परामर्श के क्रम में गायत्री परिवार प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि समय की माँग को देखते हुए सक्रिय हो जाना युवा की असली पहचान है। उन्होंने कहा कि अपना देश, समाज यदि उठता है, तो उसके मूल में ऐसी ही सृजनात्मक प्रवृत्तियों का योगदान होगा। युवकों में शौर्य, साहस और पराक्रम का जोश होता है। उन्होंने नेपाल की आध्यात्मिक उन्नति एवं विकास के लिए वीरगंज में अक्टूबर 2017 में अश्वमेध महायज्ञ का आयोजन करने की घोषणा की। इस अवसर पर संस्था की अधिष्ठात्री शैलदीदी ने युवाओं को रचनात्मक कार्यक्रमों में भागीदारी करने के लिए प्रेरित किया तथा उसमें आने वाली संभावित समस्याओं के निवारण हेतु सूत्र भी बताये।

शिविर के समापन सत्र को संबोधित करते हुए वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री केसरी कपिल ने कहा कि युवाओं में जबरदस्त शक्ति होती है। अगर वे सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ें तो उन्हें इच्छित सफलता अवश्य मिल सकती है। युवा क्रांति के अंतर्गत स्थान-स्थान पर युवा जोड़ो, युवाओं की शक्ति को जगाने एवं उसे सार्थक रूख देने जैसे कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं।

शिविर समन्वयक श्री केदार प्रसाद दुबे ने बताया कि इस शिविर में नेपाल प्रांत के 50 जिलों के करीब 500 युवा शामिल रहे। कुल 24 सत्र हुए, जिसमें प्रातःकालीन के सत्रों में आत्म निर्माण के पक्षों को उभारने के लिए विषय विशेषज्ञों ने मार्गदर्शन दिया, तो वहीं दिन के अन्य सत्रों में बौद्धिक विकास, रचनात्मक कार्यक्रमों में भागीदारी एवं समाज निर्माण की गतिविधियों के आयोजन, संचालन के लिए निर्धारित था। वीरगंज में होने वाले अश्वमेध महायज्ञ के लिए 11 सदस्यीय टीम का गठन किया गया। इस अवसर पर शिविर समन्वयक ने प्रतिभागियों की विविध शंकाओं का समाधान भी किया।

पाँच दिन तक चले इस शिविर में नेपाल के विकास में युवाओं के योगदान से संबंधित विभिन्न विषयों पर प्रज्ञा अभियान के संपादक श्री वीरेश्वर उपाध्याय, देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी, प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या, डॉ. ओपी शर्मा, श्री आशीष सिंह आदि ने सम्बोधित किया।

ब्रक्सीअनो, इटली में खुला अखिल विश्व गायत्री परिवार का केन्द्र

योग धर्म आश्रम इटली में उपस्थित प्रशिक्षित शिक्षक

सिद्धिदात्री, श्वेता

अखिल विश्व गायत्री परिवार का केन्द्र ब्रक्सीआनो, इटली में खुला है। खालसा पंथ के भाई हरिसिंह खालसा ने देसंविवि के कुलाधिपति डॉ प्रणव पण्ड्या एवं प्रति कुलपति चिन्मय पण्ड्या का हृदय से आभार व्यक्त किया। इनके अनुसार संस्कृति व योग से संबंधित बहुत से कार्यक्रमों में शांतिकुंज एवं देसंविवि में भागीदारी के दौरान भारतीय संस्कृति के बहुत से सोपानों के दर्शन हुये। इस संस्था में सकारात्मक जीवन जीने से संबंधित कई सूत्र मिलते हैं तो वहीं इन धरोहरों का संरक्षण भी होता है। इन्होंने बताया कि 17 दिसंबर को योग धर्म आश्रम, इटली के 13 बैचलर डिग्री शिक्षकों को योग का प्रशिक्षण दिया गया। इस पूरे कार्यक्रम में आश्रम के 30 वरिष्ठ शिक्षक भी सम्मिलित हुये। सम्पूर्ण कार्यक्रम बहुत प्रेरणाप्रद एवं सद्भावना पूर्ण संदेश के साथ सम्पन्न हुआ। आयोजनकर्ताओं के अनुसार इस आश्रम में योग प्रशिक्षण का नियमित क्रम चलता है तथा अभी तक कुल 120 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में बीबी गुरु इन्द्रकौर की महत्तवपूर्ण भूमिका है, जो भाई हरि सिंह खालसा के साथ-साथ इस आश्रम की संस्थापिका है। इस आश्रम में शांतिकुन्ज के सप्त आन्दोलनों के साथ-साथ व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण जैसे विषयों पर रचनात्मक कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। देसंविवि के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या के अनुसार योग के माध्यम से उठाया गया यह एक ऐसा कदम है, जिससे भारतीय संस्कृति का विस्तार जन जन को प्रेरित करेगा एवं सामाजिक समरसता की भावना का उदय होगा। भविष्य में इस केन्द्र से समाजिक क्रांति के क्षेत्र में बहुआयामी कार्यक्रम चलाये जाएगें।

जम्बूरी में विद्यापीठ के प्रज्ञा बैण्ड को मिला दूसरा स्थान

श्रद्धेय से आशीर्वाद लेते शांतिकुंज के प्रज्ञा बैंड समूह

वैशाली

कर्नाटक के मैसूर में इस वर्ष 29 दिसम्बर से 4 जनवरी की तारीखों में 17वीं राष्ट्रीय जम्बूरी आयोजित हुई। युग निर्माण स्काउट गाइड जनपद शांतिकुंज के प्रज्ञा बैंड ने उत्तराखंड की ओर से प्रतिनिधित्व करते हुए देश भर में दूसरा स्थान प्राप्त कर देवभूमि का मान बढ़ाया।

प्रज्ञा बैण्ड ने यह मुकाम महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी के स्वागत के अवसर पर किये गये प्रदर्शन के आधार पर प्राप्त किया। गौरतलब है कि यह सम्मान उत्तराखण्ड को पहली बार मिला। शांतिकुंज लौटने पर युग निर्माण स्काउट गाइड जनपद शांतिकुज के अभिभावक डॉ प्रणव पण्ड्या ने टीम को बधाई दी। इस अवसर पर डॉ. पण्ड्या ने कहा कि स्काउट्स गाइड्स एक ऐसा संगठन है जो सेवाधर्म और कर्तव्यनिष्ठा की शिक्षा देता है तथा देश को सेवाभावी युवा प्रदान करता है। स्काउट्स गाइड्स सेवाभावी आने वाले दिनों के धरोहर हैं जो समाज व राष्ट्र की सेवा कर उसे आगे बढ़ाने का कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि आज राष्ट्र को सेवाभावी युवाओं की जरूरत है और आशा है स्काउटस गाइडस के प्रतिभागी इस उद्देश्य को पूरा करेंगे।

लीडर ट्रेनर श्री नरेन्द्र सिंह ने बताया कि राष्ट्रीय जम्बूरी में युगनिर्माण स्काउट्स गाइड्स, जनपद शांतिकुंज तथा देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के 26 सदस्यीय टीम ने भागीदारी की। साथ ही राष्ट्रीय जम्बूरी में आयोजित एडवेंचर, फू ड प्लाजा सहित 16 प्रतियोगिताओं में से 11 प्रतियोगिताओं में एवार्ड शांतिकुंज सहित देवभूमि के स्काउट्स गाइड्स को मिला। शांतिकुंज जनपद के लीडर ट्रेनर श्री सीताराम सिन्हा, श्री मंगल गढ़वाल, श्री सोमेश्वर ताण्डी व श्रीमती कविता भागबोले के नेतृत्व में दल ने विभिन्न प्रदर्शन किये।

उप्र के 24 जिलों के 500 युवाओं का प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

मृदुल, प्रतिभा

युवा प्रशिक्षण शिविर में उपस्थित उप्र के प्रतिनिधि

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 500 युवाओं का विशेष प्रशिक्षण सत्र सम्पन्न हुआ। शिविर में उप्र के लखनऊ, कानपुर, एटा, बुलन्दशहर, फर्रूखाबाद, बरेली, बिजनौर सहित 24 जिलों के युवक-युवतियाँ शामिल हैं। शिविर के प्रथम दिन युवा क्रांति एक समग्र दृष्टि विषय पर संबोधित करते हुए अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि जोश, उत्साह, उमंग एवं कार्य करने की क्षमता से भरा होना ही युवा है। युवाओं को भाग्य पर नहीं, कर्म पर विश्वास होना चाहिए। कहा कि मनःस्थिति को बदलकर परिस्थिति को बदल देने की क्षमता रखने वाले युवाओं की फौज तैयार करने की जरूरत है, जो नवनिर्माण की दहलीज पर खड़ा समाज व देश को बुलंदियों तक पहुँचा सके। देसंविवि के कुलाधिपति डॉ. पण्ड्या ने कहा कि भारत के अनेक युवाओं ने बाधाओं को चीरते हुए देश को स्वतंत्र कराने में अपना सब कुछ झोंक दिया था। आज ऐसे ही युवाओं की जरूरत है जो भ्रष्टाचार, काला बाजारी, कुरीतियों के जकड़न में उलझे देश को उबार सके। गीता मर्मज्ञ डॉ. पण्ड्या ने श्रीमद्गीता के विभिन्न श्लोकों की व्याख्या के साथ आन्तरिक दुर्बलताओं से लड़ने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि अगले दिनों 4 वीडियो रथ निकाले जायेंगे, जिसके माध्यम से व्यसनमुक्त-संस्कारयुक्त स्वावलंबी गाँव के निर्माण, वर्ष 2017 में एक करोड़ पौधे लगाने, 1008 स्मृति उपवन बनाने, निर्मल गंगा जनअभियान व जलस्रोतों की सफाई में भागीदारी तथा बालसंस्कार शालाएं चलाने के लिए गाँव-गाँव, शहर-शहर जाकर लोगों को प्रेरित किया जायेगा। उन्होंने कहा कि 2525 किमी की दूरी तय करने वाली गंगा को स्वच्छ व निर्मल बनाने के लिए भी खासकर गंगा तट के युवाओं को भागीरथ पुरुषार्थ करना है। इससे पूर्व शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री वीरेश्वर उपाध्याय ने कहा कि मनुष्य में साहस, संयम जैसे कई सद्गुण विद्यमान रहते हैं। उनके सहारे अपनी आंतरिक विभूतियों को विकसित किया जा सकता है तथा युवावस्था में बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है। कार्यक्रम का संचालन श्री के पी दुबे ने किया।

मकर संक्रांति पर शांतिकुंज में सम्पन्न हुए विविध संस्कार

आलोक

मकर संक्रांति पर हरिद्वार में गंगा स्नान का विशेष महत्त्व है। खास करके इस दिन कुंभनगरी हरिद्वार जैसे तीर्थ स्थल में संस्कारों के माध्यम से जीवन को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरणा प्राप्त करना सोने में सुहागा जैसा है। इसी उद्देश्य को लेकर मकर संक्रांति के पावन अवसर पर गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में सामूहिक निःशुल्क संस्कार सम्पन्न हुए। इसमें उत्तराखण्ड के अलावा दिल्ली, बिहार, राजस्थान आदि प्रांतों से हजारों श्रद्धालु विभिन्न संस्कार कराए जिनमें मुण्डन, यज्ञोपवीत व आदर्श विवाह संस्कार के माध्यम से जीवन को नई दिशा देने के लिए संकल्पित हुए।

शांतिकुंज स्थित संस्कार प्रकोष्ठ के प्रभारी पं0 शिवप्रसाद मिश्र ने कहा कि संक्रांति से सूर्य उत्तरायण हो जाता है। उत्तरायण को देवताओं का दिन अर्थात् सकारात्मकता का प्रतीक माना गया है। इसीलिए इस दिन जप, दान, श्राद्ध-तर्पण, स्नान, संस्कार आदि धार्मिक क्रियाकलापों का विशेष महत्व है। इसीलिए गायत्री तीर्थ में आज विशेष सामूहिक संस्कार आयोजित किये गये।

उन्होंने बताया कि देवभूमि से आये 250 से अधिक लोगों का सामूहिक मुण्डन तथा 200 बटुक ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुए। नवदम्पतियों ने आदर्श वैवाहिक जीवन की शपथ लेकर सात फेरे लिये।

भा.सं.ज्ञा.प. के समन्वयकों की तीन दिवसीय राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन

विवेक

अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि संस्कारों के द्वारा श्रेष्ठतम संस्कृति का निर्माण होना चाहिए क्योंकि संस्कृति अध्यात्म का पर्याय है। संस्कृतिनिष्ठ व्यक्ति ही सही मायने में समाज विकास में योगदान दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि अध्यात्म रूपी संस्कृति व्यक्ति के अंतर्जगत को सद्गुणों से भरती है, तो विज्ञान रूपी सभ्यता उन्हें जीवन की मूलभूत आवश्यकता को पूरा करने की विधि सिखाती है।

दोनों के समन्वय से ही समाज का चहुंमुखी विकास हो सकता है। डॉ. पण्ड्या ने कहा कि पूज्य आचार्यश्री पाँच वीरभद्रों के माध्यम से विचार संशोधन के लिए, नवनिर्माण के लिए संसाधन जुटाने के लिए, दुरात्माओं को भयभीत करने के लिए, भावी परिजनों को सशक्त व सुदृढ़ बनाने के लिए एवं स्वयंसेवियों के संरक्षण के लिए जुटे हैं। डॉ. पण्ड्या ने कहा कि युवाओं को परिस्थितियों का दास नहीं, वरन् बाधाओं को चिरकर रास्ता बनाने वाले होने चाहिए।

अखिल विश्व गायत्री परिवार भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के माध्यम से ऐसे युवाओं की फौज तैयार कर रहा है। ऐसे संस्कृतिनिष्ठ युवा ही समाज का भविष्य तय करेंगे।

इस अवसर पर डॉ. पण्ड्या ने राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए भासंज्ञाप कराने वाले राजस्थान के जिला राजसमंद-122848 विद्यार्थी के साथ प्रथम तथा राजस्थान के जनपद बांसवाड़ा-114001 विद्यार्थी के साथ द्वितीय स्थान पर रहे। उन्हें स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया। इससे पूर्व शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री वीरेश्वर उपाध्याय ने कहा कि लक्ष्य निर्धारण एवं उस दिशा में सार्थक पहल विद्यार्थी जीवन में होता है। संगोष्ठी के समन्वयक डॉ. पी.डी. गुप्ता ने बताया कि संगोष्ठी में राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश सहित 17 प्रांतों के 350 से अधिक जिला एवं प्रांतीय समन्वयक शामिल हैं।

भा. सं. ज्ञा. प. के आयोजकों को पुरस्कृत करते डॉ. पण्ड्या

संवेदना से दुनिया का निर्माण संभवः श्री गौरीशंकर शर्मा

युवा शिविर के दौरान उद्बोधन देते शांतिकुंज व्यवस्थापक गौरीशंकर शर्मा

❒ हिमांशु

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में उत्तर प्रदेश के 24 जिलों के युवाओं का पाँच दिवसीय भविष्य निर्माता शिविर का समापन हुआ। इस शिविर में कानपुर, लखनऊ, बुलन्दशहर, एटा, बिजनौर आदि जनपदों से आये करीब 500 युवाओं ने आदर्श गाँव के निर्माण, बालसंस्कार शालाएं चलाने, वृक्षारोपण करने, उत्साही एवं सेवाभावी युवाओं की टीम गठित करने सहित कुल 8 रचनात्मक कार्यक्रमों को गति देने के संकल्प लिये। साथ ही सभी ने अपने-अपने क्षेत्रों में युवाओं को नशा मुक्ति अभियान से जोड़ने के लिए विशेष पहल करने पर जोर दिया। समापन समारोह के अवसर पर प्रतिभागियों को पाथेय देते हुए शांतिकुंज व्यवस्थापक श्री गौरीशंकर शर्मा ने कहा कि भाव संवेदना ही एक ऐसा आधार है, जिसके माध्यम से मनुष्य पशु-पक्षियों को भी अपना बना लेता है। श्री शर्मा ने कहा कि आज ऐसे युवाओं की जरूरत है, जो समाज के विकास में अपनी प्रतिभा लगा सकें। वरिष्ठ कार्यकर्ता डॉ. एके दत्ता ने कहा कि युवा किसी शारीरिक अवस्था का नाम नहीं है, वरन् यह कर्तव्यनिष्ठा का नाम है।

> ❒ आदर्श गाँव सहित 8 रचनात्मक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के संकल्प के साथ विदा हुए युवा

शांतिकुंज में संपन्न हुआ नारी जागरण शिविर

❒ शांतिकुंज की वरिष्ठ प्रतिनिधि श्रीमती शेफाली पंड्या ने कहा नारी शक्ति को जगाना ही होगा

❒ लक्ष्मी, प्रिया

नारी शक्ति के बीच ऊर्जा का संचार करने व समाज में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका का अहसास कराने के उद्देश्य से गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में पांच दिवसीय नारी जागरण शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए शांतिकुंज की वरिष्ठ प्रतिनिधि श्रीमती शेफाली पंड्या ने कहा अगर परिवार, समाज व राष्ट्र को ऊँचा उठता हुआ देखना है, तो आधी आबादी रखने वाली नारी शक्ति को जगाना ही होगा, उन्हें घरों की दीवारों से निकालकर सुसंस्कृत एवं स्वावलंबी बनाने की दिशा में प्रशिक्षित करना होगा।

माता भगवती देवी शर्मा ने बिना भेदभाव के अशिक्षित बहिनों को भी तैयार कर समाज की मुख्य धारा में लाकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करा दिया था, वे आज अपने साथ अनेक बहिनों को तैयार करने में जुटी हैं। नारी शक्ति के पास समाज की समस्याओं का समाधान है। इन दिनों नारियों को बाल विवाह, फैशन, कन्या भ्रूण हत्या, अंधविश्वास जैसे कुरीतियों से बाहर निकलना है। शिविर को कुल 12 सत्रों में विभाजित किया गया। शिविर में उत्तर प्रदेश के वाराणसी, बांदा, इलाहाबाद,जौनपुर, बलिया सहित 16 जिलों की सैकड़ों बहिने शामिल रही। शिविर में नारियों के लिए गायत्री परिवार द्वारा संचालित हो रहे कुटीर उद्योग सहित विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों की विस्तार से जानकारी दी। पांच दिन तक चले इस कार्यक्रम के समापन सत्र को संबोधित करते हुए शांतिकुंज की महिला मंडल की प्रमुख श्रीमती यशोदा शर्मा ने कहा जिस तरह खनिज पदार्थों को तपाकर उपयोगी बनाया जाता है, उसी तरह बहिनें भी साधना, उपासना व आराधना के माध्यम तपकर समाज विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। उन्होंने कहा कि संगठित होकर कार्य करने से बड़े से बड़ा कार्य सहज पूरा हो जाता है। गायत्री परिवार के जनक पूज्य आचार्य जी ने युग का निर्माण करने हेतु अखिल विश्व गायत्री परिवार इसी उद्देश्य से बनाया है। शिविर की संयोजिका डॉ. सुलोचना शर्मा ने कहा कि हमेशा सकारात्मक सोंचे, विचारें।

नारी जागरण शिविर को संबोधित करती वरिष्ठ प्रतिनिधि श्रीमती शेफाली पंड्या

गायत्री विद्यापीठ शांतिकुंज के 35वाँ वार्षिकोत्सव का समापन

❒ हिमांशी, वर्षा

अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख एवं गायत्री विद्यापीठ के अभिभावक डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि विद्यार्थी ही भावी राष्ट्र के कर्णधार हैं, आने वाले दिनों के प्रकाश हैं। परिवार, समाज व राष्ट्र में यदि प्रकाश फैलेगा तो वह संस्कारवान विद्यार्थियों के कारण ही होगा। विद्यार्थियों को विद्याध्ययन के साथ-साथ सुसंस्कारिता का अभ्यास भी करते रहना चाहिए।

वे गायत्री विद्यापीठ के 35वाँ वार्षिकोत्सव के समापन अवसर पर देसंविवि के मृत्युंजय सभागार में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि बचपन जहाँ खेल का समय होता है, वहीं यह जीवन को गढ़ने और सँवारने का समय भी होता है। यह वह समय होता है जिसमें परिवार ही नहीं, समाज और राष्ट्र के नवनिर्माण की भी नींव रखी जाती है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने आहुति एवं स्तुति द्वारा प्रस्तुत कत्थक कृष्णलीला ने वाहवाही लूटी तो वहीं केदारनाथ आपदा पर गढ़वाली लोकनृत्य ने पर्यावरण के प्रति जागरूकता का संदेश दिया।

शिव शक्ति ताण्डव, नारी जागरण लघु नाटिका, गणेश स्तुति के माध्यम से तथा वंशिदा अग्रवाल, ऋषिका, जागृति, वागिशा, श्रद्धा, रुचिका, विभूति, राशि, चेतना आदि की मनमोहन नृत्य से उपस्थित लोगों को झूमने को मजबूर कर दिया।

वहीं बनाना रेस, नींबू दौड़, स्कूल के लिए तैयार होना, बतख दौड़, मेढ़क दौड़, बोतल में पानी भरना, बोरा दौड़, रस्सी दौड़, रिले दौड़, घड़ा दौड़ आदि प्रतियोगिताओं में बच्चों ने अपना दमखम दिखाया। बच्चे गिरते रहे, पर जोश में कमी आने नहीं दी और वे अपने लक्ष्य तक पहुँचकर ही दम लिया।

इन खेलों में सरगम, आदित्य, रुचि, हिमांशु, निस्वार्थ, अनुज, रिया, युगांशी, लोकेश, कोमल, श्रेया, शिखर, अतुल्य, जिज्ञासा,ऋषिका, स्वास्तिक, सार्थक, यशस्वी, श्रद्धा, अक्षय, अनन्य, ने अपने-अपने खेल में प्रथम स्थान प्राप्त किया। विजयी बच्चों को विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती शेफाली पण्ड्या, प्रधानाचार्य प्रो. एसएन मिश्रा एवं उपप्रधानाचार्य श्री भास्कर सिन्हा ने पुरस्कृत किया।

गायत्री विद्यापीठ के वार्षिकोत्सव में प्रस्तुति देती छात्राएं

शांतिकुंज में प्राकृतिक जल शोधक संयंत्र का शुभारंभ

❒ राजू राम

गायत्री परिवार प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं संस्था की अधिष्ठात्री शैलजीजी ने शांतिकुंज में उत्तराखण्ड का पहला प्राकृतिक जल शोधक संयंत्र का पूजन कर शुभारंभ किया। इस संयंत्र की क्षमता प्रति घंटे पचास हजार लीटर पानी स्वच्छ करने की है। इस अवसर पर डॉ. पण्ड्या ने कहा कि हरिद्वार के पानी में आयरन व सिल्ट की मात्रा अधिक रहती है जिससे कई तरह की बीमारियाँ होने का भय रहता है। इससे निजात पाने के लिए शांतिकुंज ने प्राकृतिक जल शोधक संयंत्र का निर्माण कराया है जो कई मायनों में फायदेमंद है।

कहा कि इस संयंत्र द्वारा पानी में घुले हुए आयरन, सिल्ट एवं पानी के रंग को साफ किया जाता है। संस्था की अधिष्ठात्री शैल दीदी ने कहा कि यह संयंत्र पूरी तरह प्राकृतिक है जिससे पानी के सभी तत्व मौजूद रहते हैं। विभाग के इंजीनियर श्री जयसिंह यादव ने बताया कि संयंत्र में पानी के आयरन व सिल्ट को एरिएटर के द्वारा हवा व धूप से ज्यादा से ज्यादा संपर्क कराकर उसके आयरन तत्व को कम किया जाता है। फिर फिटकरी और ब्लिचिंग को मिलाकर इसमें घुले हुए सिल्ट को फ्लोकुलेटर के द्वारा फ्लोक्स बनाकर आगे क्लियरिफायर के द्वारा शोधन किया जाता है।

इसके पश्चात प्राकृतिक पद्धति से आयरन व सिल्ट को कम करने के लिए विशेष रूप से तैयार किये गये फिल्टर से उसे छाना जाता है, जिसमें पानी को बालू, रेत, बजरी, बोल्डर की कुल दस परतों के रेपिट ग्रेविटी फिल्टर के माध्यम से छानकर पानी को टंकी में एकत्र किया जाता है, फिर सप्लाई किया जाता है।

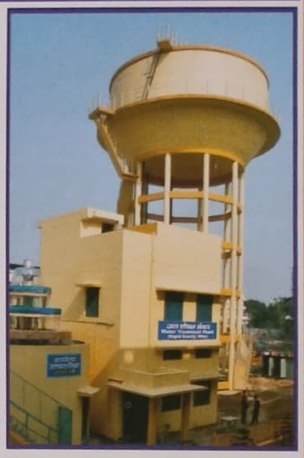

शांतिकुंज में नवनिर्मित जल शोधक संयंत्र

ज्ञान चैतना का पर्व वसंतः डॉ प्रणव पण्ड्या

❒ रजत

अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख डॉ प्रणव पण्ड्या ने वसंत पर्व के मौके पर कहा कि वसंत मनुष्य के अंदर ज्ञान चेतना जगाने वाला पर्व है। ज्ञान के आधार पर ही मनुष्य में सेवा, संवेदना, कर्त्तव्यपरायणता जैसी सद्गुणों का विकास होता है। डॉ पण्ड्या वसंतोत्सव समारोह के मुख्य कार्यक्रम को संबोधित किया जिसमें देश-विदेश के हजारों लोग उपस्थित रहे। उन्होंने वसंत को जीवन की नीरसता को दूर कर उल्लास व उमंग जगाने वाला पर्व बताया। उन्होनें यह भी कहा कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा हमारे वीर सैनिक आदि के जीवनों में इन आयामों को परिलक्षित होते देखा जा सकता है। डॉ पण्ड्या ने गायत्री के तीन रूप- महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती की विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा कि उनसे प्रेरणा लेकर हमें भी शक्ति, सामर्थ्य एवं ज्ञानार्जन के पथ पर अग्रसर होना चाहिए।

संस्था की अधिष्ठात्री शैल जीजी ने कहा कि वसंत संत की तरह होता है। वह सूर्य की भांति सभी प्राणी में समान भाव से प्यार, उमंग, उत्साह उडेलता है। कहा कि रामदास, शंकर, मीरा, पं श्रीराम शर्मा आचार्य आदि के जीवन में जब वसंत आया तो, उन्होंने वह कर दिखाये, जिससे समाज युगों तक प्रेरणा व प्रकाश प्राप्त करता। इस अवसर पर गायत्री परिवार प्रमुखद्वय ने रसियन, हिन्दी, मराठी, पंजाबी, बांग्ला की 17 पुस्तकों तथा 2 आडियो सीडी का विमोचन किया। इस अवसर पर गायत्री परिवार के हजारों लोगों ने पूज्य आचार्य की समाधि पर पुष्प अर्पित कर उनके बताये सूत्रों को अपनाने का संकल्प लिया।

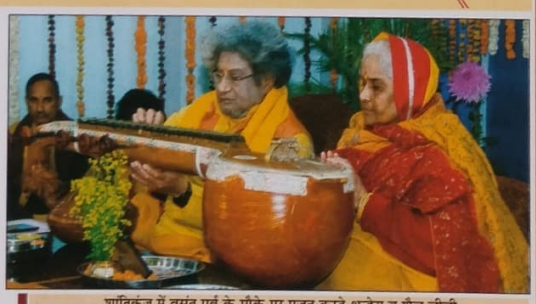

शांतिकुंज के मुख्य सभागार में हुए अंतर महाविद्यालयीन भाषण प्रतियोगिता में महिला महाविद्यालय कनखल की कु. रूपा को पहला, देसंविवि के गुप्ता गणेश को दूसरा तथा देसंविवि के भृगु बग्गा को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। इन विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में 'वर्तमान चुनौतियाँ और युवा वर्ग' विषय पर अपने विचार रखे। इन प्रतियोगिताओं में देसंविवि, ऋषि संस्कृत महाविद्यालय-खड़खड़ी, पतंजलि विवि, एचईसी कॉलेज कनखल, महिला महाविद्यालय कनखल, सीटी डिग्री कॉलेज रुड़की, रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज, हेमवतीनंदन बहुगुणा विवि गढ़वाल आदि शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। दोपहरकालीन सभा में अंतर विद्यालयीन कविता पाठ में जनपद के गायत्री विद्यापीठ, जीआईसी गैंडीखाता, जवाहर नवोदय विद्यालय, स्कोलर एकेडमी-रुड़की, कन्या इंटर कॉलेज-रुड़की, धूमसिंह मेमोरियल स्कूल ज्वालापुर, दिल्ली पब्लिक स्कूल रानीपुर, बीएमसी मुंजाल ग्रीन मेडोन स्कूल रोशनाबाद, शंकर इंटर कॉलेज तुलगपुर, नेशनल कन्या इंटर कॉलेज खानपुर सहित 14 विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। विद्यार्थियों की कविता ने लोगों को युवावस्था से ही संतों, सुधारकों एवं शहीदों के दिखाये मार्ग को अपनाने हेतु आवाहन किया।

शांतिकुंज में वसंत पर्व के मौके पर पूजन करते श्रद्धेय व शैल जीजी

राष्ट्रीय स्तर पर टेबिल टेनिस प्रतियोगिता में विद्यापीठ के छात्र-छात्राओं ने जीते पदक

शांतिकुंज अभिभावक श्रद्धेय के साथ खेल प्रतिभाएं

❒ भृगु

राष्ट्रीय स्तर पर गुवाहटी, आसाम में आयोजित 5 दिवसीय टेबिल टेनिस टूर्नामेंट में उत्तराखण्ड से गायत्री विद्यापीठ के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। इस प्रतियोगिता का आयोजन युवा एवं खेल मंत्रालय नई दिल्ली द्वारा किया गया था। इसमें गायत्री विद्यापीठ की छात्रा ईशा देवांगन ने द्वितीय स्थान व छात्र तन्मय वर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इनके इस उपलब्धि पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ0 प्रणव पण्ड्या ने कहा कि गायत्री विद्यापीठ में पढाई के साथ-साथ कई प्रकार के खेलों का विस्तार किया जा रहा है। इससे विद्यार्थी का सम्पूर्ण विकास होता है। दोनों छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं देते हुए डॉ0 पण्ड्या ने "खेल खेलो" नामक शीर्षक द्वारा इनको पुरस्कृत किया । गायत्री विद्यापीठ के प्रधानाचार्य प्रो0 एस.एन. मिश्रा ने दोनों छात्रों के बारे में बताते हुए कहा कि उक्त दोनों छात्र-छात्राऐं पढाई के साथ-साथ खेलों में भी जागरूक रहते हैं। अन्य विद्यार्थियों को भी इस तरह से अपनी प्रतिभा को सामने लाना चाहिए। इनकी इस उपलब्धि पर पूरे गायत्री विद्यापीठ परिवार की ओर से बधाई दी गयी।

बेसहारा बचपन के मसीहा डॉ कैलाश सत्यार्थी

अवधेश

हम लकी है जो हमने अपना बचपन जिया है, पर दुनियाभर में ऐसे करोड़ों बच्चे है जो यह तक नहीं जानते है, कि बचपन क्या होता है ?

"छोटू चल गिलास उठा, ऐ छोटू चल पानी ला, जूठे बर्तन धोता है, छोटू लोगों को चाय पिलाता है छोटू मेम साहब के बच्चों को संभालता है छोटू फिर भी एक- आध रोटी देख कर ललचाता है छोटू पैरो में छाले हो, चाहे पेट में न निवाला हो, फिर भी रोज काम पर आता है छोटू। धूप हो चाहे छांव, चाहे हो नंगे पांव बस अपने भविष्य पर मुस्कुराता है छोटू।"

यही वह दर्द विदारक पंक्तियां थी जिसने एक ऐसे युवक का सृजन किया जिन पर आज हमारे देशवासियों को गर्व महसूस होता है। यह कहानी यूं तो शुरु होती है, देश के उस उत्तरार्ध से जब देश दासता की गुलामी से तो आजाद हो गया था किन्तु फिर भी मानसिक गुलाम था। अंग्रेजों की दासता इस कदर हावी हो गयी थी कि बाल मजदूरी, बंधुआ मजदूरी पूरी तरह से हावी हो चुकी थी। देश तो आजाद था किन्तु देश के भविष्य देश की नन्ही कोपलाएं, सृजनकर्ता गुलाम थे। जब देश का भविष्य ही गुलाम हो तो हम देश के आजाद होने की परिकल्पना कैसे कर सकते हैं। यह कहानी उस शख्स की है जिसके बारे में लिख पाना शायद असंभव है। मेरी कलम भी रो पड़ी है कभी न समाप्त होने वाली संघर्षगाथा की कहानी लिखने में कैलाश हमारे इतिहास की गौरवगाथा का वरदान करता हुआ नाम जिसमें करुणा है, प्रेम है, स्नेह है, समर्पण की भावना है। कैलाश सत्यार्थी का जन्म 11 जनवरी 1954 को भारत में मध्य प्रदेश के विदिशा जिले में हुआ था। उनका वास्तविक नाम कैलाश शर्मा है। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गवर्नमेंट ब्वॉयज हायर सैकेण्ड्री स्कूल से प्राप्त की, तत्पश्चात सम्राट अशोक टैक्नोलॉजिकल इंस्टिट्यूट विदिशा से इलेक्ट्रिकल इंजनीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के उपरान्त हाई-वोल्टेज इंजीनियरिंग में पोस्ट ग्रेजुएशन की उपाधि प्राप्त की। कैलाश बचपन से ही बेहद भावुक एवं सहयोगी प्रवृति के थे। जब वे 11 वर्ष के थे, तब उन्होंने इस बात को महसूस किया कि बहुत से बच्चे, किताबें न होने के कारण स्कूल नहीं जा पाते हैं, इसलिए वह एक ठेला लेकर पास हुए बच्चों की किताबें एकत्रित करते थे और जरूरतमंद बच्चों को किताबें उपलब्ध करावाते थे। 23 वर्ष की अवस्था में कैलाश की शादी हो गयी थी एवं 26 वर्ष की आयु में उन्होंने इंजीनियरिंग की नौकरी छोड़कर समाज सेवा का प्रण ले लिया। उस समय जेपी आन्दोलन का दौर था। उनके साथी चुनाव लड़कर राजनीति में उतर गये, लेकिन उन्होंने राजनीति को नहीं चुना क्योंकि उनका मानना था कि समाज में बदलाव राजनीति से नहीं बल्कि समाजसेवा से लाया जा सकता है। कैलाश ने समाज सेवा को धार देते हुए अपनी आवाज जन-जन तक पहुंचाने का निर्णय लिया। इसके लिए उन्होंने "संघर्ष जारी रहेगा" नामक पत्रिका की शुरुआत की। पत्रिका के माध्यम से उन्होंने दबे-कुचले बंधुआ मजदूरों की पीड़ा को आवाज दी। कैलाश ने बचपन बचाओं आंदोलन की शुरुआत की। उन्होंने स्वामी अग्निवेश के साथ मिलकर बंधुआ मुक्ति मोर्चा का गठन किया। जिसके आज 20000 सदस्य हैं। जो कालीन, कांच, ईंट भट्ठो, पत्थर खदानों, घरेलू बाल मजदूरी तथा साड़ी उद्योगों में काम करने वाले बच्चों को मुक्त करता है।

बाल मजदूरी के खिलाफ चलने वाले अभियान को कैलाश सत्यार्थी ने देश के साथ-साथ विदेशों में भी फैलाया। उन्होंने 108 देशों के 14 हजार संगठनों के साथ मिलकर 'बाल मजदूरी' के विरोध में यात्रा आयोजित की। पेशे से इलैक्ट्रानिक इंजीनियर रहे कैलाश सत्यार्थी को समाज सेवा के साथ-साथ भोपाल गैस त्रासदी में राहत अभियान चलाने के लिए भी जाना जाता है। उन्हें 1994 में जर्मनी का 'द एयकन इंटरनेशनल पीस' अवार्ड 1995 में अमेरिका का 'रॉबर्ट एफकैनेडी ह्यूमन राइट्स अवार्ड' 2007 में 'मैडल ऑफ इटैलियन सीनेट' और 2009 में 'अमेरिका के डिफेंडर्स ऑफडेमोक्रेयर' अवार्ड सहित कई राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय अवार्ड मिल चुके हैं। अब तक वे विश्व भर के 144 देशों के 83000 से अधिक बच्चों के अधिकारों की रक्षा कर चुके हैं। सत्यार्थी के इस कार्य के कारण ही वर्ष 1991 में अंतराष्ट्रीय श्रम संघ द्वारा बाल श्रम की निकृष्टम श्रेणियों पर संधि स. 182 को अंगीकृत किया गया जो अब तक दुनियाभर की सरकारों के लिए इस क्षेत्र मे प्रमुख मार्ग निर्देशक है। सन 2014 में पाकिस्तान की नारी शिक्षा कार्यकर्ता मलाला युसुफ जई के साथ संयुक्तरूप से नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया तो यह न सिर्फ हमारे राष्ट्र के लिए अपितु हमारे समाज के लिए गौरव की बात है। कैलाश जी आज हम सभी युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत है, ऐसे देश के गौरव देवतुल्य महान विभूति को शत् शत् नमन।

बुलटू रेडियो-जनमीडिया की क्रांतिकारी पहल

ऋषभ, वैशाली

ब्लूटूथ-मोबाइल का एक शेयरिंग ऐप है, जिसका ज्यादातर प्रयोग आज गांवों में किया जाता है। लेकिन क्या आपने सोचा है कि ब्लूटूथ भी ऐसा माध्यम हो सकता है, जो लोगों की समस्याओं को हल करने में मदद कर सकता है। ऐसा ही कुछ किया है बीबीसी के पत्रकार शुभ्रांशु चौधरी ने बुलटू रेडियो के जरिये। आज बुलटू रेडियो एक प्रभावी संचार का एक ऐसा मॉडल बन गया है जिसे गोंडवाना क्षेत्र के आदिवासी लोगों को ध्यान में रखकर बनाया गया था। जिन आदिवासी क्षेत्रों में मीडिया और लोगों के बीच किसी प्रकार का संपर्क नहीं है, वहां बुलटू रेडियो मीडिया के एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरा। साथ ही साथ यह रेडियो समाज सेवा और मीडिया उद्यमिता का एक ऐसा उदाहरण है, जिसकी मदद से सुभ्रांशु चौधरी ने देश के लगभग 1 करोड़ उदासीन गोंडवाना आदिवासियों के अंदर एक नई ऊर्जा और आशा का संचार किया। वहीं दूसरी तरफ यह बुलटू रेडियो ने युवाओं के लिए रोजगार का एक अवसर देने का काम भी किया। देश के कई आदिवासी गांवों में ब्लूटूथ को बुलटू कहते हैं। बुलटू यानि मनोरंजन का साधन। ब्लूटूथ के द्वारा लोग आपस में मोबाइल के द्वारा गाने, फिल्मों का आदान-प्रदान करते हैं। इसी ब्लूटूथ को शुभ्रांशु चौधरी ने बना दिया ज्ञान और सूचनाओं का साधन-'बुलटू'। इस रेडियो के जरिए आज देश के कई आदिवासी गांवों का विकास हो रहा है, लोग नई-नई तकनीकों को जान रहे हैं। बुलटू रेडियो के माध्यम से लोग अपनी समस्याओं को अपने ही क्षेत्रीय भाषा में रिकॉर्ड करके बताते हैं और उन्हें उन समस्याओं का समाधान भी मिलता है। जैसे कि बिजली संबंधी, पानी संबंधी और आदि अन्य समस्याएं। साथ ही साथ इस रेडियो के माध्यम से लोग अपनी क्षेत्रीय भाषा में अपनी कहानी, गाने, कविताओं और विभिन्न मुद्दों पर अपनी प्रतिक्रियाओं आदि को भेजते हैं। जिसके माध्यम से उनके सांस्कृतिक मनोरंजन के साथ-साथ वह अपनी संस्कृति का प्रचार-प्रसार भी करते हैं। बुलटू रेडियो के माध्यम से सुदुर गांव के लोग विकास की राह पर धीरे-धीरे आगे बढने लगे हैं।

बुरांश का फूल हिमालयी क्षेत्र की शान है, पहचान है। इसके औषधीय गुण भी लाजवाब है जो सेवन करने वाले को उर्जावान और निरोग रखता है। बुरांश के फूल से जूस व चटनी भी बनाई जा सकती है। बुरांश लाल, सफेद और गुलाबी रंग में पाया जाता है लेकिन लाल रंग का बुरांश का फूल अधिक लाभप्रद है। जानिये कि आप इस खूबसूरत फूल के क्या-क्या लाभ उठा सकते है

हृदय रोग कम करने में सहायक-

बुरांश के फूल के जूस में 'फैटी एसिड' और 'प्यूफा' प्रचूर मात्रा में पाया जात है जो शरीर में कोलेस्ट्रॉल बनने नहीं देता है। जो हृदय रोग को कम करने में रामबाण औषधी सिद्ध होता है।

रोग-प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि-

बुरांश के जूस में लोह तत्व पाए जाते है तो शरीर संपूर्ण पोषक तत्व उपलब्धता को बनाए रखते है और शरीर में एंटी ऑक्सिडेंट की पूर्ति करके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते है।

हिमोग्लोबिन कमी पूरी करने में सहायक-

बुरांश के जूस का निरन्तर सेवन करने से हिमोग्लोबिन की कमी पूरी होती है, जिससे कोशिकाओ में उचित रक्तचाप बनारहता है और रक्त की मात्रा में वृद्धि होती है।

उक्त रक्तचाप व ब्लड प्रेशर में पर नियंत्रण-

जिन लोगों को अधिक रक्तचाप और ब्लड प्रेशर की समस्या है उनके लिए बुरांश के जूस का उक्त सेवन संजीवनी की तरह कार्य करता है।

लीवर, व दिमाग बढ़ाने में सहायक-

बरांश के जूस नाइट्रेट तत्व पाए जाते है। जूस का निरन्तर सेवन करने से दिमाग की क्षमता बढ़ती है। साथ ही रक्त साफ होने से लीवर अरोग्य रहता है।

हल्के हड्डी दर्द में सहायक-

जिन लोगों को हड्डीयो में हल्का दर्द रहता है उनके लिए बुरांश का जूस लाभदायक है।

हिमांशु भट्ट

बुरांश फूल के औषधीय लाभ

स्वावलंबन की अलख जगा रही पहाड़ की बेटी

दुर्गेश

गरीबी में आशा से भरी निगाहे, पलायन करते युवा, खाली घर, प्रकृति की अद्भुत सुंदरता, प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता, यह कोई फिल्मी सीन नहीं बल्कि एक सच्चाई है। आज पहाड़ों की जिंदगी को समस्या से ग्रस्त देखा जाता है। लेकिन उसी पहाड़ में नारी सशक्तिकरण को धरातल पर उतारती यह लड़की मात्र 27 की उम्र में महिलाओं के बीच एक नजीर बनकर उभरी है। 20-22 साल के युवा जहां अपने करियर, दुनिया की चकाचौंध और आधुनिक सुख, सुविधाओं के लिए पहाड़ को छोड़कर शहर में जाते है। उसी पहाड़ की बेटी ने अपने आस पास व्याप्त इस दर्द को देखा और महसूस किया। और फिर उसने कुछ ऐसा किया जिसके बारे में आमतौर पर लोग कभी नहीं सोचते। उत्तराखण्ड के चमोली जिले से 25 किलोमीटर दूर कंडारा गांव में जन्मी दिव्या रावत आज पहाड़ी क्षेत्रों में महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने वाली एक सफल महिला उद्यमी बनकर उभरी हैं। दिव्या रावत को उनकी इस पहल के लिए 8 मार्च 2016 को राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा नारी सशक्तिकरण अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। दिव्या गांव में पली बढ़ी है लेकिन आधुनिक युग के हर एक पहलू से वे वाकिफ हैं। दिल्ली में पढ़ी दिव्या ने सोशल वर्क से मास्टर डिग्री किया। दिव्या सोशल वर्क कार्य तो कर रही थी, लेकिन उसके दिल में पहाड़ो का दर्द टीस मारता था। आखिरकार दिव्या ने गांव वापस लौटकर पलायन कर रहे लोगो के लिए गांव में ही कुछ ऐसा रोजगार उपलब्ध कराने की सोची जिसके फलस्वरूप पलायन पर लगाम लगाई जा सके। 2013 में गांव वापस लौटी दिव्या ने पहाड़ो में मशरूम उगाने के लिए कार्य करना प्रारंभ किया।

दिव्या की इस मेहनत मे उनकी किस्मत ने साथ दिया। दिव्या ने जब कदम आगे बढ़ाए तो उनका साथ देने सैकड़ो लोग आ गए। आज हालात यह बन चुके है कि दिव्या के गांव मे जहां सैकड़ों घरो में ताला लटकता था वहां आज स्वच्छ और हरे-भरे मशरूम की खेती हो रही है। 2013 में उन्हे तीन लाख रुपये का मुनाफा हुआ। अभी वह 50 से ज्यादा युनिट स्थापित कर चुकी है, जिसमें कि महिला और युवा व्यवसाय करते हैं। आज उसकी यह सफलता एक कंपनी का रूप ले चुकी है, जिसका टर्नओवर साल के अंत तक करीब एक करोड़ रुपये हो जायेगा। पहाड़ों पर पलायन रोकने व रोजगार के सरल साधन मुहैया कराने के इस सराहनीय कार्य के लिए दिव्या को उत्तराखण्ड सरकार की तरफसे "मशरूम की ब्राण्ड एम्बेसडर" घोषित किया गया।

दिव्या की कंपनी उत्तराखण्ड के 10 जिलों अब तक 53 युनिट लगा चुकी है। मात्र 20 हजार के खर्च में एक स्टैंडर्ड युनिट का निमार्ण हो जाता है जो 10 से 15 वर्ष तक चलती है। ब्रांड एम्बेसडर होने के बावजूद भी दिव्या रोड पर खड़े होकर खुद मशरूम बेचती है। ताकि वहां की महिलाओं की झिझक दूर हो और वे खुद मशरूम बेच सके। दिव्या की इस पहल से आज उत्तराखण्ड के विभिन्न जिलों कि हजारों महिलाएं स्वावलंबी हो रही है और अपने पैरो पर खड़ी हो रही हैं। आज न केवल वह मशरूम को से रिकॉर्ड कमाई कर रही है बल्कि मशरूम की नई तकनीकि के बारे में लोगो को प्रशिक्षित भी कर रही है। अपने अनुभव साझा करते हुए दिव्या कहती है-अगर समाज में बदलाव लाना है तो सबसे पहले खुद को बदलें। दूसरो को नसीहत तब दे जब आप ने कुछ अलग व समाज को ऊंचा उठाने के लिए किया हो। आज दिव्या उत्तराखण्ड के साथ देश में रोजगार के लिए भटकते उन युवाओं के लिए आदर्श बन चुकी है जो आज खेती-किसानी से दूर भाग रहे हैं।

डॉ. प्रणव पंड्या, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा हिंदुस्तान तथा ऑफसेट प्रेस, ज्वालापुर, हरिद्वार में मुद्रित। संपादक : डॉ. चिन्मय पंड्या।
पता: शोध एवं प्रकाशन विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड)। पिन-249411। फोन नं.:- 01334-260602, 26132866 फैक्स :- 01334-260866 Email : sanskritisanchar@gmail.com
UTTBIL00354 /35/1/2013-TC